

अध्याय 1:

समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

परिचय (Introduction)

- व्यक्ति और समाज का द्वंद्वात्मक संबंध: समाजशास्त्र का एक मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और समाज के आपसी (द्वंद्वात्मक) संबंधों को समझना है। व्यक्ति समाज से अलग होकर नहीं जी सकता; वह विभिन्न सामाजिक समूहों (जैसे- परिवार, नातेदारी, वर्ग, लिंग, जाति, जनजाति, गाँव तथा देश) से जुड़ा होता है।
- समाजशास्त्रीय कल्पना (Sociological Imagination): सी. राइट मिल्स (C. Wright Mills) के अनुसार, समाजशास्त्र हमें व्यक्ति के 'व्यक्तिगत जीवनवृत्त' (Biography) और समाज के 'इतिहास' (History) के बीच के गहरे संबंध को समझने में मदद करता है।
- सामाजिक जीवनशैली पर प्रभाव: व्यक्ति का समाज में स्थान यह तय करता है कि उसके पास सामाजिक संसाधनों तक पहुँच के क्या साधन हैं। उदाहरण स्वरूप, एक विद्यार्थी किस स्कूल में पढ़ेगा, कैसा भोजन करेगा, कैसे कपड़े पहनेगा या उसे कैसी स्वास्थ्य सुविधाएँ मिलेंगी—यह सब उसकी सामाजिक स्थिति और स्तरीकरण पर निर्भर करता है।
- तीन मुख्य अवधारणाएँ: व्यक्ति और समाज के आपसी संबंधों को गहराई से समझने के लिए इस अध्याय में तीन प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन किया जाता है:
 - सामाजिक संरचना (Social Structure)
 - सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)
 - सामाजिक प्रक्रियाएँ (Social Processes - सहयोग, प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष)

सामाजिक संरचना तथा सामाजिक स्तरीकरण (Social Structure & Social Stratification)

सामाजिक संरचना (Social Structure)

सामाजिक संरचना का अर्थ यह है कि समाज में मानवीय व्यवहार और संबंध यादृच्छिक (random) या अनियमित नहीं होते, बल्कि उनमें एक निश्चित क्रम, नियमितता और प्रतिमान (Pattern) होता है। जिस प्रकार एक इमारत दीवारों, फर्श और छत से मिलकर एक निश्चित आकार लेती है, उसी प्रकार समाज की संस्थाएँ (परिवार, स्कूल, विवाह आदि) मनुष्य के व्यवहार को नियमितता प्रदान करती हैं।

- इमारत के रूपक (Building Metaphor) की सीमा: इमारत और समाज में अंतर यह है कि इमारत स्थिर होती है, जबकि सामाजिक संरचना मनुष्य की क्रियाओं और निरंतर दोहराए जाने वाले संबंधों से बनती और बदलती रहती है। इसे सामाजिक पुनरुत्पादन (Social Reproduction) कहा जाता है।

- सामाजिक बाध्यता (Social Constraint):** * एमिल दुर्खाइम (Émile Durkheim): दुर्खाइम के अनुसार समाज अपने सदस्यों के व्यवहार पर एक अदृश्य दबाव या प्रतिबंध लगाता है। जैसे एक कमरे की दीवारें मनुष्य के आने-जाने के रास्तों को सीमित करती हैं, वैसे ही सामाजिक संरचना हमारी क्रियाओं की सीमा तय करती है। समाज व्यक्ति के जन्म से पहले भी विद्यमान था और उसके बाद भी रहेगा (जैसे- भाषा, मुद्रा, कानून आदि)।
- कार्ल मार्क्स (Karl Marx):** मार्क्स ने माना कि सामाजिक संरचना व्यक्ति पर बाध्यता डालती है, लेकिन साथ ही मनुष्य में सृजनात्मकता भी होती है जिससे वह संरचना को बदल सकता है। मार्क्स के शब्दों में: "मनुष्य अपना इतिहास स्वयं बनाते हैं, परंतु वे इसे अपनी मनपसंद शर्तों या इच्छा से नहीं, बल्कि दी गई ऐतिहासिक और संरचनात्मक बाध्यताओं के भीतर बनाते हैं।"

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)

सामाजिक स्तरीकरण से तात्पर्य समाज के विभिन्न समूहों के बीच संरचनात्मक असमानताओं के अस्तित्व से है। इसके तहत समाज निश्चित प्रतिमानों के आधार पर उच्च और निम्न समूहों में विभाजित होता है, और यह असमानता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है।

स्तरीकरण केवल व्यक्तिगत योग्यताओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समूहों की सदस्यता से जुड़ा होता है। आधुनिक समाजों में स्तरीकरण के मुख्य आधार धन, वर्ग, जाति, प्रजाति, लिंग, क्षेत्र और समुदाय हैं।

लाभ के तीन बुनियादी प्रकार (Three Basic Types of Advantages/Benefits)

विशेषाधिकार प्राप्त समूहों द्वारा उपभोग किए जाने वाले असमान रूप से विभाजित लाभों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में समझा जा सकता है:

लाभ का प्रकार	परिभाषा / अर्थ	उदाहरण
(अ) जीवन अवसर (Life Chances)	वे सभी भौतिक एवं आर्थिक लाभ जो व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाते हैं।	संपत्ति, आय, अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ, सुरक्षित रोजगार तथा मनोरंजन के साधन।
(ब) सामाजिक प्रस्थिति (Social Status)	समाज के अन्य सदस्यों की दृष्टि में प्राप्त मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं उच्च स्थान।	समाज में सम्मानजनक पद, आदर-सत्कार, उच्च कुल या पद से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा।
(स) राजनैतिक प्रभाव (Political Influence)	एक समूह द्वारा दूसरे समूहों पर प्रभुत्व जमाना अथवा निर्णय लेने की प्रक्रिया पर नियंत्रण रखना।	नीतियों को अपने हित में बनवाना, सरकारी निर्णयों पर प्रभाव डालना, शासन सत्ता में भागीदारी।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने के दो तरीके

समाजशास्त्र मानवीय व्यवहार को केवल "मनुष्य का स्वभाव" मानकर व्याख्या नहीं करता, बल्कि सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष को समाज की वास्तविक संरचना के संदर्भ में समझता है। इसके दो मुख्य परिप्रेक्ष्य हैं:

1. प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य (Functionalist Perspective)

- मुख्य विचारक: एमिल दुर्खाइम (Émile Durkheim)।
- केंद्र बिंदु: समाज में 'व्यवस्था और संतुलन' (Social Order & Equilibrium) बनाए रखना।
- प्रकार्यवादियों का मानना है कि समाज के प्रत्येक अंग की एक विशेष भूमिका (प्रकार्य) होती है जो संपूर्ण समाज को चलायमान रखने के लिए आवश्यक है।
- इस परिप्रेक्ष्य में सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष को समाज की सार्वभौमिक विशेषता माना जाता है। यहाँ प्रतिस्पर्धा और संघर्ष को ऐसी क्रियाओं के रूप में देखा जाता है जो समाज में भारी नुकसान पहुँचाए बिना सुलझा ली जाती हैं और अंततः सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करती हैं।

2. संघर्ष का परिप्रेक्ष्य (Conflict Perspective)

- मुख्य विचारक: कार्ल मार्क्स (Karl Marx)।
- केंद्र बिंदु: असमानता, संसाधनों पर नियंत्रण और शक्ति का संघर्ष।
- संघर्ष दृष्टिकोण के अनुसार, समाज विभिन्न वर्गों, जातियों और लिंगों में बँटा हुआ है, जहाँ उत्पादन के साधनों पर प्रभावशाली वर्ग (जैसे पूँजीपति या ज़मींदार) का कब्ज़ा होता है।
- इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, सहयोग भी अक्सर स्वैच्छिक न होकर 'बलात्' (Forced) होता है। शोषित वर्ग असमान व्यवस्था के अंतर्गत काम करने के लिए मजबूर होता है। संघर्ष दृष्टिकोण समाज की विषमताओं और परिवर्तन की प्रक्रियाओं पर बल देता है।

सहयोग तथा श्रम विभाजन (Cooperation & Division of Labor)

मानव अस्तित्व के लिए सहयोग अनिवार्य है। लेकिन मानव सहयोग पशुओं के सहयोग से भिन्न होता है क्योंकि मनुष्य चेतना के साथ कार्य करता है और प्रकृति तथा समाज दोनों में परिवर्तन लाता है।

एमिल दुर्खाइम का दृष्टिकोण: एकता और परार्थवाद

दुर्खाइम के अनुसार, समाज में 'एकता' (Solidarity) एक नैतिक बल है। उन्होंने समाज के दो प्रकारों में श्रम विभाजन और सहयोग को समझाया:

- यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity):** * यह पूर्व-औद्योगिक या सरल समाजों में पाई जाती है।
 - यहाँ समाज के सदस्य एक जैसा जीवन जीते हैं, श्रम विभाजन बहुत सरल (मुख्यतः आयु और लिंग पर आधारित) होता है।
 - लोग साझा मान्यताओं और चेतना से आपस में जुड़े होते हैं।
- सावयवी एकता (Organic Solidarity):** * यह जटिल औद्योगिक समाजों की विशेषता है।
 - यहाँ श्रम विभाजन और विशेषीकरण (Specialization) अत्यधिक उच्च स्तर का होता है।

- लोग अपनी आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे पर पूरी तरह निर्भर होते हैं (जैसे- एक कपड़ा व्यापारी अपने भोजन के लिए किसान पर और इलाज के लिए डॉक्टर पर निर्भर है)।

कार्ल मार्क्स का दृष्टिकोण: उत्पादन और अलगाव (Alienation)

- मार्क्स के अनुसार, वर्ग-विभाजित समाजों में सहयोग स्वैच्छिक न होकर बाहरी शक्तियों द्वारा आरोपित होता है।
- **अलगाव (Alienation):** पूँजीवादी व्यवस्था में मज़दूर का अपने द्वारा बनाए गए उत्पाद और स्वयं अपनी कार्य-प्रक्रिया से नियंत्रण खत्म हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक कुम्हार या बुनकर को अपना काम करने में सृजनात्मक आनंद मिलता है, जबकि एक फैक्ट्री मज़दूर दिनभर केवल लीवर खींचता है। इस स्थिति में मज़दूर अपने काम से कट जाता है (अलगाव), और उसका सहयोग स्वैच्छिक नहीं बल्कि विवशतापूर्ण होता है।

प्रतिस्पर्धा - अवधारणा एवं व्यवहार के रूप में (Competition: Concept & Practice)

- **आधुनिक पूँजीवाद और प्रतिस्पर्धा:** आधुनिक समाजों में प्रतिस्पर्धा को एक प्राकृतिक और स्वाभाविक गुण मान लिया गया है, जबकि समाजशास्त्र के अनुसार प्रतिस्पर्धा पूँजीवाद के विकास के साथ उभरी एक सामाजिक और ऐतिहासिक प्रक्रिया है।
- **पूँजीवाद के मूल तत्व:** व्यापार का विस्तार, श्रम विभाजन, विशेषीकरण और बढ़ती उत्पादकता। पूँजीवादी विचारधारा यह मानती है कि बाज़ार में मुक्त प्रतिस्पर्धा से अधिकतम कार्यकुशलता प्राप्त होती है (जैसे- सबसे कुशल फर्म का टिके रहना या सबसे ज्यादा अंक लाने वाले छात्र को दाखिला मिलना)।
- **अफ्रीका के बच्चों का उदाहरण:** पाठ में दिए गए किस्से के अनुसार, जब अफ्रीका के एक पिछड़े क्षेत्र में एक शिक्षक ने बच्चों के बीच दौड़ की प्रतियोगिता रखी और विजेता को चॉकलेट देने का वादा किया, तो बच्चे खुश होने के बजाय दुखी हो गए। उन्होंने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ में दौड़े ताकि सब मिलकर चॉकलेट बाँट सकें। यह दर्शाता है कि प्रतिस्पर्धा मनुष्य की प्राकृतिक वृत्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से सीखी जाने वाली प्रक्रिया है।
- **प्रतिस्पर्धा का असमान धरातल:** प्रतिस्पर्धा की विचारधारा यह मानकर चलती है कि सभी व्यक्ति समान धरातल पर मुकाबला कर रहे हैं। परंतु वास्तव में सामाजिक स्तरीकरण (जाति, वर्ग, लिंग) के कारण लोगों के पास संसाधनों और अवसरों की भारी असमानता होती है। जो बच्चे गरीबी के कारण स्कूल से ड्रॉप-आउट हो जाते हैं, वे प्रतिस्पर्धा की दौड़ से पहले ही बाहर हो जाते हैं।

संघर्ष तथा सहयोग (Conflict & Cooperation)

- **संघर्ष का अर्थ:** समाज में समूहों के बीच हितों की टकराव को संघर्ष कहते हैं। संसाधनों की कमी और उन पर अधिकार जमाने की होड़ संघर्ष को जन्म देती है।
- **संघर्ष के रूप:** यह वर्ग, जाति, जनजाति, लिंग, नृजातीयता या धर्म के आधार पर हो सकता है।
- **अदृश्य/छिपा हुआ संघर्ष तथा पारिवारिक गतिकी:**
- समाज में जहाँ खुला संघर्ष दिखाई नहीं देता, वहाँ भी संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं मानी जा सकती।
- **अमर्त्य सेन और लैंगिक अध्ययन:** परिवार को पारंपरिक रूप से केवल सहयोग की इकाई माना जाता था। परंतु

महिलावादी अध्ययनों से पता चलता है कि परिवार के भीतर भी संसाधनों और अधिकारों को लेकर गहरा संघर्ष होता है।

- **मातृ परहितवादिता और पितृसत्तात्मक जोखिम:** उत्तर भारतीय ग्रामीण समाजों में महिलाएँ अक्सर अपने जन्म के परिवार की संपत्ति पर अपना कानूनी अधिकार नहीं जतातीं। ऐसा वे इसलिए नहीं करतीं कि वे संघर्ष नहीं चाहतीं, बल्कि वे डरती हैं कि अधिकार माँगने से भाइयों से संबंध खराब हो जाएँगे और उनका मायका छूट जाएगा। इसलिए वे प्रत्यक्ष संघर्ष से बचकर 'स्वीकृति और सहयोग' का रास्ता चुनती हैं।
- **भूमि संघर्ष एवं तकनीकी परिवर्तन (भूदान-ग्रामदान उदाहरण):**
- तकनीक के विकास से सामाजिक सहयोग के स्वरूप बदलते हैं। उदाहरण के लिए, पुराने समय में सिंचाई के लिए 'चरस' चलाने हेतु 2 जोड़ी बैल और 4 आदमियों की जरूरत होती थी, जिसके लिए किसान पड़ोसियों और रिश्तेदारों से सहयोग लेते थे।
- जब 'रहत' (Persian Wheel) या ट्यूबवेल जैसी तकनीक आई, तो केवल 1 व्यक्ति और 1 जोड़ी बैल की जरूरत रह गई। इससे तकनीकी विकास ने आपसी सहयोग की पारंपरिक निर्भरता को कम कर दिया।

महत्वपूर्ण शब्दावली (Glossary of Key Terms)

1. **परहितवाद (Altruism):** सिद्धांततः बिना किसी निजी लाभ के दूसरों के हित और कल्याण के लिए कार्य करना।
2. **अलगाव (Alienation):** मार्क्स द्वारा दी गई अवधारणा, जिसमें मज़दूर का अपने श्रम और श्रम-उत्पाद पर कोई अधिकार नहीं रहता और उसकी कार्य के प्रति रुचि समाप्त हो जाती है।
3. **प्रतिमानहीनता (Anomie):** दुर्खाइम के अनुसार, समाज की वह स्थिति जहाँ पुराने सामाजिक नियम व मानक नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति बिना किसी सामाजिक मार्गदर्शन के दिशाहीन हो जाता है।
4. **पूँजीवाद (Capitalism):** वह आर्थिक प्रणाली जहाँ उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है और जिसका मुख्य उद्देश्य बाज़ार में लाभ कमाना होता है।
5. **श्रम विभाजन (Division of Labour):** कार्यों का विशेषीकरण, जिसके तहत उत्पादन प्रक्रिया में अलग-अलग व्यक्तियों या समूहों को अलग-अलग कार्य सौंपे जाते हैं।
6. **प्रभुत्वशाली विचारधारा (Dominant Ideology):** वे विचार और मान्यताएँ जो समाज के प्रभावशाली और शक्तिशाली समूहों के हितों की रक्षा करते हैं और असमानता को वैध ठहराते हैं।
7. **व्यक्तिवाद (Individualism):** वह विचारधारा या सिद्धांत जो समूह या समुदाय की तुलना में व्यक्ति की स्वायत्तता और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देता है।
8. **मुक्त व्यापार / उदारवाद (Laissez-faire / Liberalism):** वह आर्थिक दृष्टिकोण जो यह मानता है कि सरकार को बाज़ार और आर्थिक गतिविधियों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।
9. **यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity):** दुर्खाइम के अनुसार, पारंपरिक और सरल समाजों में पाई जाने वाली एकता, जो सदस्यों की एकरूपता और समान अनुभवों पर आधारित होती है।
10. **आधुनिकता (Modernity):** 18वीं और 19वीं शताब्दी में यूरोप में शुरू हुई सामाजिक प्रक्रिया, जो औद्योगीकरण, विशेषीकरण, तर्कसंगतता और त्वरित परिवर्तन से पहचानी जाती है।
11. **सावयवी एकता (Organic Solidarity):** जटिल औद्योगिक समाजों में पाई जाने वाली सामाजिक संहति, जो अत्यधिक श्रम विभाजन और परस्पर निर्भरता पर आधारित होती है।
12. **सामाजिक बाध्यता (Social Constraint):** समाज या समूह द्वारा अपने सदस्यों के व्यवहार पर डाला जाने वाला

प्रभाव या सीमाएँ।

13. **संरचना (Structure):** किसी संगठन या समाज की वह अंतर्निहित बनावट और प्रतिमान जो मानव व्यवहार को निर्देशित व नियंत्रित करता है।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Textbook Exercise Answers)

प्रश्न 1. कृषि तथा उद्योग के संदर्भ में सहयोग के विभिन्न कार्यों की आवश्यकता की चर्चा कीजिए।

उत्तर: कृषि और उद्योग दोनों ही क्षेत्रों में उत्पादन और सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सहयोग अनिवार्य है, परंतु दोनों में इसके स्वरूप अलग-अलग हैं:

1. **कृषि के संदर्भ में सहयोग:**

- **पारंपरिक तकनीक एवं श्रम साझा करना:** पारंपरिक कृषि में सिंचाई (जैसे कुओं से चरस द्वारा पानी खींचना), फसल की बुआई, कटाई और गह्राई के समय अधिक मानव श्रम और पशु धन की आवश्यकता होती है। छोटे किसान अक्सर एक-दूसरे के खेतों में मिलकर काम करते हैं और बैल या औजार साझा करते हैं।
- **सामुदायिक संसाधनों का प्रबंधन:** गाँव में तालाब, नहर, चरागाह और वनों के रखरखाव के लिए ग्रामीणों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है।

2. **उद्योग के संदर्भ में सहयोग:**

- **जटिल श्रम विभाजन (Complex Division of Labour):** आधुनिक उद्योग सावयवी एकता (Organic Solidarity) पर आधारित हैं। एक कारखाने में एक वस्तु के निर्माण के लिए सैकड़ों विशेषज्ञ काम करते हैं। उदाहरण के लिए, कार बनाने वाले उद्योग में डिजाइनिंग, असेंबलिंग, पेंटिंग, इलेक्ट्रिकल और क्वालिटी चेक से जुड़े लोग आपस में सहयोग करते हैं।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Global Supply Chain):** औद्योगिक क्षेत्र में कच्चे माल की आपूर्ति से लेकर विनिर्माण, परिवहन, विपणन (Marketing) और बिक्री तक विभिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों के बीच वैश्विक स्तर पर सहयोग की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2. क्या सहयोग हमेशा स्वैच्छिक अथवा बलात् होता है? यदि बलात् है, तो क्या मंजूरी प्राप्त होती है अथवा मानदंडों की शक्ति के कारण सहयोग करना पड़ता है? उदाहरण सहित चर्चा करें।

उत्तर: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सहयोग हमेशा पूरी तरह से स्वैच्छिक (Voluntary) नहीं होता; कई बार यह बलात् (Forced) या बाध्यतामूलक भी होता है।

1. **स्वैच्छिक बनाम बलात् सहयोग:**

- **स्वैच्छिक सहयोग:** यह वह सहयोग है जो व्यक्ति अपनी इच्छा, प्रेम, नैतिक भावना या साझा लक्ष्य के लिए करता है (जैसे- किसी प्राकृतिक आपदा के समय राहत कार्य में मदद करना या दोस्तों का आपस में मिलकर काम करना)।
- **बलात् सहयोग:** यह वह सहयोग है जहाँ व्यक्ति या समूह के पास सहयोग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता, क्योंकि समाज की संरचना, शक्ति संतुलन या कानून उन्हें ऐसा करने पर मजबूर करते हैं।

2. **मंजूरी और सामाजिक मानदंडों की भूमिका:**

- बलात् सहयोग में कई बार प्रत्यक्ष हिंसा की जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि सामाजिक मानदंड (Norms), परंपराएँ और वैचारिक संरचनाएँ व्यक्ति से उसकी **अप्रत्यक्ष सहमति (Consent)** प्राप्त कर लेती हैं। व्यक्ति को लगता है कि सहयोग न करने पर उसे सामाजिक बहिष्कार, सजा या नुकसान का सामना करना पड़ेगा।

3. उदाहरण:

- **पितृसत्तात्मक परिवार में महिलाएँ:** भारत के ग्रामीण समाज में बेटियाँ मायके की संपत्ति पर कानूनी अधिकार होने के बावजूद अपना दावा छोड़ देती हैं। वे भाइयों और पुरुषों के उत्तराधिकार के मानदंड का समर्थन (सहयोग) करती हैं। यह सहयोग स्वैच्छिक दिखता है, लेकिन इसके पीछे यह डर होता है कि यदि वे अपना हक माँगेगी तो भाइयों का प्रेम खो देंगी और संकट के समय मायके का सहारा खत्म हो जाएगा।
- **कारखाने का मज़दूर:** कार्ल मार्क्स के अनुसार, एक गरीब मज़दूर उद्योगपति की शर्तों पर काम करने के लिए मजबूर होता है। यह सहयोग स्वैच्छिक न होकर अपनी जीविका चलाने की विवशता (बलात्) का परिणाम होता है।

प्रश्न 3. क्या आप भारतीय समाज से संघर्ष के विभिन्न उदाहरण ढूँढ़ सकते हैं? प्रत्येक उदाहरण में वे कौन से कारण थे जिसने संघर्ष को जन्म दिया? चर्चा कीजिए।

उत्तर: भारतीय समाज में विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से विविध प्रकार के संघर्ष विद्यमान हैं। मुख्य उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. जातिगत संघर्ष (Caste Conflicts):

- **कारण:** पारंपरिक सामाजिक स्तरीकरण में उच्च जातियों द्वारा संसाधनों (भूमि, शिक्षा) पर वर्चस्व और निम्न जातियों का उत्पीड़न। जब दलित और पिछड़े वर्गों ने अपने लोकतांत्रिक अधिकारों, सम्मान और समानता की माँग की, तो जातियों के बीच प्रत्यक्ष संघर्ष उभरे।

2. भूमि एवं कृषक संघर्ष (Land & Agrarian Conflicts):

- **कारण:** ज़मींदारी प्रथा, अनौपचारिक ऋणग्रस्तता और भूमि का असमान वितरण। उदाहरण स्वरूप, तेलंगाना आंदोलन, नक्सलबाड़ी आंदोलन और भूदान-ग्रामदान के समय भूमि पर अधिकार को लेकर किसानों और भूस्वामियों के बीच संघर्ष हुआ।

3. लैंगिक संघर्ष (Gender Conflicts):

- **कारण:** पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जिसके तहत महिलाओं को संपत्ति अधिकार, निर्णय लेने की स्वतंत्रता और समान वेतन से वंचित रखा गया। महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों और घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने से परिवार व समाज में संघर्ष सामने आया।

4. नृजातीय एवं क्षेत्रीय संघर्ष (Ethnic & Regional Conflicts):

- **कारण:** भाषा, क्षेत्रीय पहचान और संसाधनों (जैसे नदियों के पानी, नौकरियों) का असमान आवंटन। पूर्वोत्तर भारत में जनजातीय समूहों और बाहरी लोगों के बीच संघर्ष या कावेरी जल विवाद इसके उदाहरण हैं।

5. सांप्रदायिक संघर्ष (Communal Conflicts):

- **कारण:** धार्मिक पहचान का राजनीतिकरण, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और ऐतिहासिक भ्रांतियाँ, जो विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच टकराव का कारण बनती हैं।

प्रश्न 4. संघर्ष को किस प्रकार कम किया जाता है इस विषय पर उदाहरण सहित निबंध लिखिए।

उत्तर:

निबंध: समाज में संघर्ष के शमन एवं निवारण के उपाय

प्रस्तावना: संघर्ष प्रत्येक समाज की एक सार्वभौमिक विशेषता है। संसाधनों की सीमितता, शक्ति का असमान वितरण और विरोधी हित संघर्ष को जन्म देते हैं। यदि संघर्ष को अनियंत्रित छोड़ दिया जाए तो यह समाज में हिंसा, अव्यवस्था और विघटन पैदा कर सकता है। इसलिए समाज विभिन्न संस्थागत और अमूर्त क्रियाविधियों के माध्यम से संघर्ष को कम करने और उसे नियंत्रित करने का प्रयास करता है।

संघर्ष कम करने के प्रमुख तरीके एवं उदाहरण:

1. लोकतांत्रिक और कानूनी ढाँचा (Legal & Democratic Framework):

- संविधान और कानून समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करके संघर्ष को कम करते हैं।
- उदाहरण: भारत में 'अस्पृश्यता निवारण अधिनियम', 'अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम' और 'दहेज प्रतिषेध अधिनियम' जैसे कानूनों ने ऐतिहासिक उत्पीड़न से उपजे संघर्षों को कानूनी संस्थागत रूप देकर कम करने का प्रयास किया है।

2. पुनर्वितरण एवं कल्याणकारी नीतियाँ (Redistributive Policies):

- आर्थिक असमानता संघर्ष का मुख्य कारण होती है। सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं से संसाधनों का संतुलन बनाया जाता है।
- उदाहरण: भारत में भूमि सुधार कानून, आरक्षण नीति, और 'मनरेगा' (MGNREGA) जैसी योजनाओं ने ग्रामीण निर्धनता और अवसरों की असमानता को कम करके संभावित जनाक्रोश को शांत किया है।

3. व्यवस्थापन और समझौता (Accommodation & Compromise):

- प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में विरोधी गुट आपस में बातचीत और मध्यस्थता के जरिए 'व्यवस्थापन' (Accommodation) कर लेते हैं।
- उदाहरण: औद्योगिक क्षेत्रों में मालिकों और ट्रेड यूनियनों (मज़दूर संघों) के बीच सामूहिक सौदेबाजी (Collective Bargaining) और त्रिपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से हड़तालों और संघर्षों को हल किया जाता है।

4. संस्थागत संवाद एवं मध्यस्थता (Institutional Dialogue):

- पंचायती राज संस्थाएँ, ग्राम सभाएँ और लोक अदालतें स्थानीय स्तर पर भूमि और सामाजिक विवादों को आपसी सहमति से सुलझाती हैं।

निष्कर्ष: संघर्ष को समाज से पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, और न ही यह हमेशा हानिकारक होता है, क्योंकि यह सामाजिक परिवर्तन और सुधार का माध्यम भी बनता है। परंतु लोकतांत्रिक मूल्यों, न्यायपूर्ण वितरण और संवाद के माध्यम से इसे हिंसक होने से रोका जा सकता है और सामाजिक संतुलन बनाए रखा जा सकता है।

प्रश्न 5. ऐसे समाज की कल्पना कीजिए जहाँ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है, क्या यह संभव है? अगर नहीं तो क्यों?

उत्तर: क्या यह संभव है? पूर्णतः प्रतिस्पर्धा-रहित समाज की कल्पना करना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है, यद्यपि प्रतिस्पर्धा की तीव्रता और उसका रूप अलग-अलग समाजों में भिन्न हो सकता है।

प्रतिस्पर्धा के अपरिहार्य (Inevitable) होने के कारण:

1. संसाधनों की सीमितता (Scarcity of Resources):

- किसी भी समाज में भौतिक संसाधन (जैसे- धन, भूमि, अच्छे मकान) और प्रतीकात्मक पुरस्कार (जैसे- उच्च

प्रस्थिति, सम्मान, अधिकार) सीमित होते हैं, जबकि उन्हें चाहने वाले लोगों की संख्या अधिक होती है। जब तक आपूर्ति की तुलना में माँग अधिक रहेगी, प्रतिस्पर्धा बनी रहेगी।

2. श्रम विभाजन और विशेषीकरण (Division of Labour):

- आधुनिक समाजों में योग्यता और कार्यकुशलता के आधार पर भूमिकाओं का आवंटन किया जाता है। सर्वोत्तम पदों, प्रतिष्ठित नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में दाखिले के लिए व्यक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक हो जाता है।

3. सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रेरणाएँ:

- यद्यपि कुछ जनजातीय या अति-सरल समाजों में सामूहिक सहयोग को अधिक प्राथमिकता दी जाती थी (जैसा कि अफ्रीका के बच्चों वाले उदाहरण में देखा गया), फिर भी उन समाजों में भी विवाह, सामाजिक प्रतिष्ठा या नेतृत्व पाने के लिए किसी न किसी रूप में प्रतिस्पर्धा मौजूद रहती थी।

निष्कर्ष: हम प्रतिस्पर्धा के 'हानिकारक और क्रूर रूपों' को कल्याणकारी नीतियों द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन समाज से प्रतिस्पर्धा को पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता क्योंकि यह सामाजिक चयन और संसाधन आवंटन का एक माध्यम है।

प्रश्न 6. अपने माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों तथा उनके समकालीन व्यक्तियों से चर्चा कीजिए कि क्या आधुनिक समाज सही मायनों में प्रतिस्पर्धा है अथवा पहले की अपेक्षा संघर्षों से भरा है और अगर आपको ऐसा लगता है तो आप समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में इसे कैसे समझाएँगे?

उत्तर:

बजुर्गों से चर्चा के मुख्य निष्कर्ष: माता-पिता और बुजुर्गों के साथ चर्चा करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनके समय की तुलना में आज का आधुनिक समाज अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और संघर्षपूर्ण हो गया है। * पहले के समय में: जीवन में सादगी थी, आवश्यकताएँ सीमित थीं, और सामुदायिक सहयोग (यांत्रिक एकता) अधिक देखने को मिलता था।

- आज के समय में:** शिक्षा, रोजगार, जीवनशैली और उपभोक्ता वस्तुओं को लेकर हर क्षेत्र में तीव्र प्रतिस्पर्धा है, जिससे मानसिक तनाव और सामाजिक संघर्ष बढ़ा है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में व्याख्या:

1. पूँजीवाद और व्यक्तिवाद का प्रसार (Capitalism & Individualism):

- समाजशास्त्रीय दृष्टि से, आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था 'अधिकतम लाभ' और 'व्यक्तिगत सफलता' पर बल देती है। सामुदायिक हितों के स्थान पर व्यक्तिवाद (Individualism) के बढ़ने से प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को अपने प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखने लगा है।

2. समान अवसरों की अवधारणा और आकांक्षाओं का बढ़ना:

- आधुनिक लोकतंत्र ने सभी नागरिकों को समानता का अधिकार दिया है। इससे समाज के वंचित वर्गों (दलित, महिलाएँ, पिछड़े वर्ग) में अपनी स्थिति सुधारने की आकांक्षाएँ जाग्रत हुई हैं। जब वे अपने अधिकारों का दावा करते हैं, तो स्थापित विशेषाधिकार प्राप्त समूहों के साथ उनका टकराव (संघर्ष) होता है।

3. सावयवी एकता और अनिश्चितता:

- एमिल दुर्खाइम के अनुसार, आधुनिक समाजों में अत्यधिक विशेषीकरण और बाजार पर निर्भरता बढ़ी है।

इसके साथ ही पुरानी सामाजिक मर्यादाएँ कमजोर हुई हैं, जिससे प्रतिमानहीनता (Anomie) और प्रतिस्पर्धात्मक तनाव में वृद्धि हुई है।

4. संसाधनों का संकुचन और जनसंख्या दबाव:

- बढ़ती जनसंख्या और सीमित रोजगार अवसरों के कारण एक-एक सीट या नौकरी के लिए लाखों उम्मीदवार प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह 'समान अवसर' के भ्रम के बीच 'असामान्यता' को बढ़ाता है, जिससे युवाओं में कुंठा और सामाजिक संघर्ष जन्म लेता है।

अध्याय 2

ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था

परिचय (Introduction)

- **परिवर्तन समाज का एक अपरिहार्य नियम है:** समाज स्थिर नहीं है; इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। वास्तव में, एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का जन्म 17वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोप में हो रहे तीव्र सामाजिक परिवर्तनों को समझने के प्रयास में ही हुआ था।
- **मानव इतिहास का परिवर्तित चक्र (Time Scale of Human History):**
 - पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व लगभग 5,00,000 (पाँच लाख) वर्षों से है।
 - कृषि की शुरुआत लगभग 12,000 वर्ष पहले हुई।
 - मानव सभ्यता का इतिहास मात्र 6,000 वर्ष पुराना है।
 - यदि मानव अस्तित्व के पूरे समय को 24 घंटे का 1 दिन मान लिया जाए, तो आधुनिक समाज का विकास अंतिम 30 सेकंड में हुआ है।
- **परिवर्तन की बढ़ती गति:** पिछले 400 वर्षों में सामाजिक परिवर्तन की गति बहुत तीव्र हुई है, और पिछले 100 वर्षों में इसमें सबसे अधिक तेजी आई है।

सामाजिक परिवर्तन (Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा

सामान्य अर्थों में सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य उन परिवर्तनों से है जो समाज की मूलभूत संरचना, संस्थाओं, नियमों, मूल्यों और सामाजिक संबंधों को बदल देते हैं। प्रत्येक छोटे-मोटे परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जाता; सामाजिक परिवर्तन होने के लिए परिवर्तन का पैमाना बड़ा होना चाहिए और उससे समाज के एक बड़े हिस्से पर प्रभाव पड़ना चाहिए।

सामाजिक परिवर्तन के मुख्य प्रकार

1. उद्विकासीय परिवर्तन (Evolutionary Change):

- यह परिवर्तन बहुत लंबे समय तक धीरे-धीरे और निरंतर गति से होता है।
- **चार्ल्स डार्विन का सिद्धांत:** डार्विन ने जीव विज्ञान में 'योग्यतम की उत्तरजीविता' (Survival of the Fittest) और अनुकूलन का सिद्धांत दिया।
- **सामाजिक डार्विनवाद (Social Darwinism):** यह सिद्धांत मानता है कि समाज भी जीवों की तरह धीरे-धीरे पर्यावरण के अनुसार खुद को ढालता हुआ विकसित होता है।

2. क्रांतिकारी परिवर्तन (Revolutionary Change):

- यह परिवर्तन अचानक, तीव्र और संपूर्ण संरचना को बदल देने वाला होता है।
- यह मुख्यतः राजनीतिक संदर्भ में देखा जाता है (जैसे- 1789 की फ्रांसीसी क्रांति या 1917 की रूसी क्रांति)।
- व्यापक तकनीकी परिवर्तनों के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है (जैसे- औद्योगिक क्रांति, संचार क्रांति)।

3. संरचनात्मक परिवर्तन (Structural Change):

- जब समाज की बुनियादी संस्थाओं या नियमों में परिवर्तन आता है।
- **उदाहरण:** सोने-चाँदी के सिक्कों के स्थान पर कागजी मुद्रा (Paper Currency) का आगमन। इसने बैंकिंग, ऋण बाजार और संपूर्ण वित्तीय ढाँचे को बदल दिया।

4. मूल्यों तथा मान्यताओं में परिवर्तन:

- **उदाहरण: बचपन (Childhood) की संकल्पना:** 19वीं सदी तक बच्चों को छोटे वयस्क माना जाता था और 5-6 वर्ष की उम्र से कारखानों या खेतों में काम पर लगा दिया जाता था। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह विचार उभरा कि बचपन जीवन की एक विशिष्ट और संवेदनशील अवस्था है। इसके परिणामस्वरूप बाल श्रम पर प्रतिबंध लगा और अनिवार्य शिक्षा के कानून बने।

सामाजिक परिवर्तन के कारक:

पर्यावरण (Environment)

- **भौतिक पर्यावरण का प्रभाव:** जलवायु, भूगोल और पारिस्थितिकी समाज के स्वरूप को तय करते हैं। मरुस्थल, बर्फीले प्रदेशों या तटीय क्षेत्रों के लोगों का भोजन, वस्त्र, रोजगार और जीवनशैली अलग होती है।
- **तकनीक द्वारा प्रभाव में बदलाव:** तकनीक ने मनुष्य को प्रकृति की बाधाओं से मुकाबला करने की क्षमता दी है,

परंतु पर्यावरण का प्रभाव खत्म नहीं हुआ है, बल्कि उसका रूप बदल गया है।

- पर्यावरणीय कारकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन के उदाहरण:

1. प्राकृतिक आपदाएँ: सुनामी (दिसंबर 2004), भूकंप या बाढ़ के कारण तटीय और ग्रामीण बस्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और वहाँ की सामाजिक-आर्थिक संरचना हमेशा के लिए बदल जाती है।
2. प्राकृतिक संसाधनों की खोज: 19वीं सदी में कैलिफोर्निया में सोने की खोज (Gold Rush) तथा 20वीं सदी में मध्य-पूर्व (खाड़ी देशों जैसे- सउदी अरब, कुवैत, यू.ए.ई.) में खनिज तेल (Oil Deposits) की खोज ने उन समाजों की अर्थव्यवस्था, जीवनशैली और वैश्विक स्थिति को पूरी तरह बदल दिया।

तकनीक तथा अर्थव्यवस्था (Technology & Economy)

- वाष्प इंजन की खोज: वाष्प इंजन के आविष्कार ने उद्योगों, रेल परिवहन (भारत में 1853 से) और वाष्पचलित जहाजों को जन्म दिया। इसने दुनिया के व्यापार, प्रवास और सामाजिक भूगोल को बदल दिया।
- सुप्त तकनीकी प्रभाव (Dormant Tech Impact): चीन में बारूद और कागज की खोज सदियों तक संकुचित रही, परंतु जब यूरोप में इसका प्रयोग हुआ तो इसने युद्ध तकनीक और छपाई (प्रिंटिंग) क्रांति के जरिए दुनिया को बदल दिया।
- आर्थिक नीतियाँ: ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग में आई मशीनों ने भारतीय उपमहाद्वीप के समृद्ध हथकरघा उद्योग को नष्ट कर दिया। रोपण कृषि (Plantation Agriculture) की माँग ने दास व्यापार (Slave Trade) को जन्म दिया।

राजनीति (Politics)

- अंतर्राष्ट्रीय युद्ध: द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद अमेरिकी कब्जे ने जापान में भूमि सुधार और औद्योगिक मॉडल में भारी बदलाव किए। बाद में (1970-1990) जापानी कार और इलेक्ट्रॉनिक्स तकनीक ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था को कड़ी चुनौती दी।
- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (Universal Adult Suffrage): 'एक व्यक्ति, एक मत' के लोकतांत्रिक सिद्धांत ने समाज में सत्ता और शक्ति के पुनर्वितरण का सबसे बड़ा सामाजिक परिवर्तन लाया।

संस्कृति (Culture)

- धार्मिक मान्यताएँ: मैक्स वेबर की पुस्तक 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' दर्शाती है कि कैसे प्रोटेस्टेंट ईसाई मूल्यों ने पूँजीवाद के विकास में मदद की। भारत में बौद्ध धर्म और भक्ति आंदोलन ने सामाजिक स्तरीकरण को प्रभावित किया।
- महिलाओं की भूमिका: द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पुरुषों के युद्ध में जाने पर महिलाओं ने कारखानों में भारी मशीनें चलाई और जहाज बनाए। इससे उनके समानता के दावे को मजबूती मिली। आज उपभोक्ता विज्ञापनों में महिलाएँ प्रमुख निर्णयकर्ता के रूप में देखी जाती हैं।
- लोकप्रिय संस्कृति (खेलकूद): ब्रिटेन के अभिजात वर्ग के खेल 'क्रिकेट' की भारत और दक्षिण एशिया में

लोकप्रियता ने इस खेल के संपूर्ण व्यावसायिक और सांस्कृतिक स्वरूप को बदल दिया है।

सामाजिक व्यवस्था, सत्ता, विवाद, अपराध तथा हिंसा

सामाजिक व्यवस्था (Social Order)

सामाजिक व्यवस्था का अर्थ है सामाजिक संबंधों, मूल्यों और नियमों को बनाए रखना ताकि समाज में निरंतरता, स्थायित्व और अनुमानयोग्यता (Predictability) बनी रहे।

- व्यवस्था बनाए रखने के दो तरीके:

1. **समाजीकरण (Socialization):** जब व्यक्ति समाज के नियमों को स्वतः और इच्छा से स्वीकार करते हैं।
2. **बाध्यता या दबाव (Coercion/Force):** जब नियमों को मानने के लिए शक्ति का प्रयोग किया जाता है।

प्रभाव, शक्ति, वैधता और सत्ता (Power, Legitimacy & Authority)

- **शक्ति (Power):** अपनी इच्छानुसार दूसरों से काम करवाने की क्षमता।
- **वैधता (Legitimacy):** जब समाज शक्ति और अधिकारों को उचित, सही और न्यायसंगत मानता है।
- **सत्ता (Authority):** मैक्स वेबर के अनुसार, वैध या कानूनी शक्ति ही सत्ता है (जैसे- जज, पुलिस अधिकारी या शिक्षक का अपने अधिकार क्षेत्र में निर्देश देना)।

विवाद, अपराध और हिंसा (Conflict, Crime & Violence)

- **विवाद (Dissent/Conflict):** प्रचलित नियमों से असहमति या विरोध (जैसे- युवाओं की उप-संस्कृति, राजनीतिक चुनाव)।
- **अपराध (Crime):** कानून की सीमाओं को तोड़ना। कभी-कभी उच्च नैतिक उद्देश्यों के लिए भी कानून तोड़ा जाता है (जैसे- महात्मा गांधी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन में दांडी नमक कानून तोड़ना)।
- **हिंसा (Violence):** हिंसा सामाजिक व्यवस्था की शत्रु है। आधुनिक राज्य के पास वैध हिंसा के प्रयोग का एकाधिकार (**Monopoly on Legitimate Violence**) होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तन

ग्रामीण समाज की विशेषताएँ

- **स्थायी कृषि का उद्भव:** शिकार व खानाबदोश जीवन से स्थायी कृषि की ओर संक्रमण ने भूमि पर निजी स्वामित्व, अतिरिक्त उत्पादन और सामाजिक असमानता को जन्म दिया।
- **कम जनसंख्या घनत्व:** गाँवों का क्षेत्रफल बड़ा होता है लेकिन जनसंख्या घनत्व कम होता है।
- **व्यक्तिगत संबंध:** गाँव में लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। यहाँ परंपरा, जाति और धर्म का नियंत्रण अत्यधिक मजबूत होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन की धीमी गति और शक्ति संरचना

- गाँव में शक्तिशाली/प्रभावशाली वर्गों (भूस्वामियों) का रोजगार और संसाधनों पर नियंत्रण होता है। गरीब और अधीनस्थ वर्ग खुले तौर पर विरोध नहीं कर पाते।
- **भूमि सुधार और 'प्रभुत्वशाली जातियाँ' (Dominant Castes):** स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधारों से मध्यवर्ती जातियों के पास भूमि का मालिकाना हक आया। एम.एन. श्रीनिवास ने इन्हें 'प्रभुत्वशाली जातियाँ' कहा (जैसे- उत्तर भारत में यादव, जाट; कर्नाटक में वोक्कालिगा)। आज ये जातियाँ राजनीतिक और आर्थिक रूप से शक्तिशाली हैं और निम्न जातियों के आंदोलनों से जूझ रही हैं।
- **तकनीक और नीतियाँ:** 'रहट' या ट्रैक्टर जैसी मशीनों ने कृषि में आपसी सहयोगात्मक निर्भरता को घटाया है। मनरेगा (MGNREGA 2005) जैसी योजनाओं ने ग्रामीण निर्धन वर्ग की सौदेबाजी की क्षमता बढ़ाई है।

नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तन

नगरीय समाज की विशेषताएँ

- **उच्च जनसंख्या घनत्व:** कम स्थान पर बहुत अधिक लोगों का निवास।
- **गैर-कृषि आर्थिक गतिविधियाँ:** उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र और प्रशासन।
- **अनामत्व (Anonymity) और व्यक्तिवादिता:** शहरों में व्यक्ति को स्वतंत्रता मिलती है, लेकिन साथ ही सामाजिक सुरक्षा का अभाव और अलगाव भी होता है।

नगरीय समाज की प्रमुख चुनौतियाँ (स्थान का प्रश्न - Spatial Issues)

1. **आवास की समस्या और बस्तियाँ (Slums):** स्थान की कमी और अत्यधिक जमीन की कीमतों के कारण शहर में गरीबों को झुग्गी-झोपड़ियों और अवैध बस्तियों में रहना पड़ता है, जहाँ पानी, बिजली और सफाई का अभाव होता है। ये क्षेत्र अक्सर स्थानीय दबंगों (दादाओं) और अपराध के गढ़ बन जाते हैं।
2. **संरक्षित समुदाय (Gated Communities):** समृद्ध और उच्च वर्ग द्वारा शहर के भीतर अपने चारों ओर ऊँची दीवारें और गेट बनाकर सुरक्षित कॉलोनियाँ बनाना, जिनकी अपनी निजी बिजली, पानी और सुरक्षा व्यवस्था होती है।
3. **जन-परिवहन और आवागमन (Mass Transit):** काम के स्थान और रिहायशी इलाके दूर होने के कारण मुंबई की 'लोकल ट्रेन' या दिल्ली 'मेट्रो' जैसी जन-परिवहन व्यवस्थाएँ शहरी जीवन की जीवन रेखा बन जाती हैं।

नगरीय परिवर्तन के रूप

- **भट्टीकरण (Gentrification):** किसी शहर के निम्न-वर्गीय या पुराने पड़ोस का मध्यम या उच्च-वर्गीय रिहायशी क्षेत्र में बदल जाना (जमीन के दाम बढ़ने पर सुधार करना)।
- **घैटोकरण (Ghettoization):** किसी विशिष्ट धर्म, जाति या नृजातीय पहचान के लोगों का सुरक्षा या भेदभाव के कारण एक ही मोहल्ले में सिमटकर बस जाना।

शब्दावली (Glossary)

1. **सीमा शुल्क / आयात कर (Customs Duty/Tariff):** विदेशों से आने वाली वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर ताकि स्वदेशी उद्योगों की रक्षा हो सके।
2. **प्रभुत्व जातियाँ (Dominant Castes):** एम.एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई अवधारणा; वे मध्यवर्ती भूस्वामी जातियाँ जो संख्या बल, आर्थिक और राजनीतिक रूप से अपने क्षेत्र में प्रभावशाली होती हैं।
3. **संरक्षित समुदाय (Gated Communities):** समृद्ध वर्ग की ऐसी बस्तियाँ जहाँ प्रवेश और निकास नियंत्रित होता है और चारों तरफ सुरक्षा दीवारें होती हैं।
4. **भट्टीकरण (Gentrification):** शहर के किसी गरीब/निम्न-वर्गीय इलाके का जीर्णोद्धार होकर उच्च या मध्यम-वर्गीय इलाके में बदल जाना।
5. **घैटो / घैटोकरण (Ghetto / Ghettoization):** किसी एक विशेष धर्म या समुदाय के लोगों का एक ही क्षेत्र में संकेंद्रित होकर बसना।
6. **वैधता (Legitimacy):** किसी शक्ति, कानून या अधिकार को समाज द्वारा सही, न्यायसंगत और स्वीकार्य मानना।
7. **समूह संक्रमण / जन परिवहन (Mass Transit):** बड़ी संख्या में लोगों को शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाले सार्वजनिक वाहन (जैसे- मेट्रो, लोकल ट्रेन, बसें)।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Textbook Exercise Answers)

प्रश्न 1. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि तीव्र सामाजिक परिवर्तन मनुष्य के इतिहास में तुलनात्मक रूप से नवीन घटना है? अपने उत्तर के लिए कारण दें।

उत्तर: हाँ, मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि तीव्र सामाजिक परिवर्तन मानव इतिहास में एक तुलनात्मक रूप से नवीन (हाल ही की) घटना है।

कारण:

1. **कालक्रम की तुलना (Time Scale):** मानव जाति का पृथ्वी पर अस्तित्व लगभग 5,00,000 वर्षों से है, लेकिन कृषि की शुरुआत 12,000 वर्ष पूर्व और सभ्यता का विकास केवल 6,000 वर्ष पूर्व हुआ।
2. **परिवर्तन की दर में तेजी:** मानव इतिहास के शुरुआती 99% समय में परिवर्तन की गति अत्यधिक धीमी थी। परंतु पिछले 400 वर्षों में (औद्योगिक क्रांति के बाद) सामाजिक परिवर्तन में अभूतपूर्व तेजी आई है।
3. **अंतिम 100 वर्षों का प्रभाव:** मानव इतिहास के अंतिम 100 वर्षों में उतने बड़े तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हुए हैं जितने पिछले कई हजार वर्षों में मिलकर भी नहीं हुए थे।

प्रश्न 2. सामाजिक परिवर्तन को अन्य परिवर्तनों से किस प्रकार अलग किया जा सकता है?

उत्तर: सामाजिक परिवर्तन को साधारण या अन्य परिवर्तनों (जैसे व्यक्तिगत, आर्थिक या मौसम संबंधी बदलाव) से निम्नलिखित आधारों पर अलग किया जाता है:

1. **संरचनात्मक बदलाव (Structural Impact):** सामाजिक परिवर्तन केवल सतह पर होने वाला बदलाव नहीं है; यह

समाज की मूल संरचना, संस्थाओं (परिवार, विवाह, अर्थव्यवस्था), नियमों और मूल्यों को बुनियादी तौर पर बदल देता है।

2. **व्यापक पैमाना (Scale and Extent):** सामाजिक परिवर्तन होने के लिए परिवर्तन का पैमाना बड़ा होना आवश्यक है। इसे समाज के एक बड़े हिस्से या संपूर्ण समाज को प्रभावित करना चाहिए।
3. **स्थायित्व (Permanence):** सामाजिक परिवर्तन समय की एक लंबी अवधि तक बना रहता है और समाज के सामाजिक संबंधों के प्रतिमानों (Patterns) को पुनर्गठित करता है।

प्रश्न 3. संरचनात्मक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं? पुस्तक से अलग उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: संरचनात्मक परिवर्तन का तात्पर्य समाज के बुनियादी ढाँचे, उसकी प्रमुख संस्थाओं, शक्ति संबंधों या नियमों में होने वाले ऐसे परिवर्तनों से है जो समाज के कार्य करने के तरीके को ही बदल देते हैं।

पुस्तक से अलग उदाहरण:

1. **डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन बैंकिंग (Digital Economy):** भारत में यूपीआई (UPI) और डिजिटल वॉलेट्स के आने से नकदी-आधारित लेन-देन की पारंपरिक संरचना बदल गई है, जिससे व्यापार, बैंकिंग और ग्राहकों के व्यवहार में संरचनात्मक परिवर्तन आया है।
2. **संयुक्त परिवार का एकल परिवार में बदलना:** औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण भारत में पारंपरिक संयुक्त परिवार (Joint Family) व्यवस्था का विघटन और एकल परिवार (Nuclear Family) की संरचना का उभरना।

प्रश्न 4. पर्यावरण संबंधित कुछ सामाजिक परिवर्तनों के बारे में बताइए।

उत्तर: पर्यावरण सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित करता है। पर्यावरण संबंधी सामाजिक परिवर्तनों के प्रमुख उदाहरण:

1. **प्राकृतिक आपदाओं द्वारा परिवर्तन:** सुनामी (2004) या भीषण भूकंपों के कारण पूरे गाँव और तटीय बस्तियाँ उजड़ जाती हैं। विस्थापित लोगों का पारंपरिक व्यवसाय नष्ट हो जाता है और उन्हें नए स्थानों पर जाकर नई सामाजिक संरचना अपनानी पड़ती है।
2. **प्राकृतिक संसाधनों की खोज:** खाड़ी देशों (सउदी अरब, कुवैत) में खनिज तेल की खोज ने वहाँ के पारंपरिक कबीलाई और मरुस्थलीय समाज को अत्यधिक समृद्ध, नगरीय और अत्याधुनिक समाज में बदल दिया।
3. **जलवायु परिवर्तन और विस्थापन:** वैश्विक तापन (Global Warming) और बढ़ते मरुस्थलीकरण के कारण 'पर्यावरणीय शरणार्थी' (Environmental Refugees) पैदा हो रहे हैं, जो कृषि छोड़कर शहरों की ओर प्रवास कर रहे हैं।

प्रश्न 5. वे कौन से परिवर्तन हैं जो तकनीक तथा अर्थव्यवस्था द्वारा लाए गए हैं?

उत्तर: तकनीक और अर्थव्यवस्था के संयोग ने समाज में सबसे तीव्र और दूरगामी परिवर्तन लाए हैं:

1. **औद्योगिक क्रांति और वाष्प इंजन:** वाष्प इंजन के आविष्कार ने कारखाना प्रणाली, रेल परिवहन और जहाजों को जन्म दिया। इसने हस्तशिल्प उद्योग को खत्म कर बड़े पैमाने पर उत्पादन और नगरीकरण को बढ़ावा दिया।
2. **संचार एवं सूचना तकनीक (IT Revolution):** इंटरनेट, स्मार्टफोन और कंप्यूटर ने कार्यस्थल की अवधारणा,

सूचना के प्रवाह और सामाजिक अंतःक्रियाओं को पूरी तरह बदल दिया है।

3. **वैश्वीकरण और बाजार नीतियाँ:** अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों (जैसे WTO) और मुक्त बाजार नीतियों ने कई पारंपरिक उद्योगों को बंद कर दिया और कॉल सेंटर्स व सॉफ्टवेयर सेवा क्षेत्र जैसे नए रोजगार पैदा किए।

प्रश्न 6. सामाजिक व्यवस्था का क्या अर्थ है तथा इसे कैसे बनाए रखा जा सकता है?

उत्तर: सामाजिक व्यवस्था (Social Order) का तात्पर्य समाज की उस स्थिति से है जहाँ सामाजिक संबंध, नियम और संस्थाएँ सुव्यवस्थित, स्थिर और अनुमानयोग्य होती हैं तथा परिवर्तन का प्रतिरोध करती हैं।

सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के दो मुख्य तरीके:

1. **स्वैच्छिक स्वीकृति / समाजीकरण (Socialization):** जब समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा समाज के सदस्य नियमों, मूल्यों और मानदंडों को स्वतः स्वीकार कर लेते हैं और उनका पालन करते हैं।
2. **दबाव / सत्ता और शक्ति का प्रयोग (Coercion & Authority):** जब समाजीकरण पर्याप्त नहीं होता, तो समाज संस्थागत शक्ति, कानून, पुलिस और न्याय प्रणाली (दबाव) के माध्यम से लोगों को नियमों का पालन करने के लिए बाध्य करता है।

प्रश्न 7. सत्ता क्या है तथा यह प्रभुता तथा कानून से कैसे संबंधित है?

उत्तर:

- **सत्ता (Authority):** मैक्स वेबर के अनुसार, सत्ता का अर्थ है न्यायसंगत या कानूनी शक्ति (Legitimate Power)। जब शक्ति को समाज द्वारा सही और कानूनी रूप से स्वीकार कर लिया जाता है, तो वह सत्ता बन जाती है (जैसे- जज या पुलिस अधिकारी के आदेश)।
- **प्रभुता (Dominance) से संबंध:** जब कोई समूह या व्यक्ति नियमपूर्वक या आदतन समाज में सर्वोच्च शक्ति का उपभोग करता है, तो उसे प्रभुता कहते हैं। प्रभुता को स्थायी बनाए रखने के लिए उसे सत्ता (वैधता) में बदलना पड़ता है।
- **कानून (Law) से संबंध:** आधुनिक समाजों में सत्ता कानून द्वारा संहिताबद्ध (Codified) होती है। कानून यह तय करता है कि सत्ता के पास क्या अधिकार हैं और उसकी सीमाएँ क्या हैं। कानून सत्ता को वैधता प्रदान करता है।

प्रश्न 8. गाँव, कस्बा तथा नगर एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर:

आधार	गाँव (Village)	कस्बा (Town)	नगर / शहर (City)
जनसंख्या घनत्व	अत्यधिक कम घनत्व।	मध्यम घनत्व।	अत्यधिक उच्च जनसंख्या घनत्व।
मुख्य आर्थिक कार्य	मुख्यतः कृषि और प्राथमिक गतिविधियाँ।	कृषि-सह-व्यापारिक गतिविधियाँ।	गैर-कृषि (उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र)।
सामाजिक संबंध	घनिष्ठ, आमने-सामने के प्राथमिक संबंध।	औपचारिक और अनौपचारिक का मिश्रण।	अनामत्व (Anonymity) और द्वितीयक संबंध।
परंपरा का प्रभाव	जाति, धर्म और परंपराओं का कड़ा नियंत्रण।	मध्यम प्रभाव।	आधुनिकता और व्यक्तिवादिता का प्रभाव।

प्रश्न 9. ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था की कुछ विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ:

- व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध: कम जनसंख्या के कारण गाँव में लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, जिससे समुदाय का व्यक्ति पर सीधा नियंत्रण होता है।
- पारंपरिक संस्थाओं का प्रभाव: जाति व्यवस्था, धर्म और पारंपरिक सामाजिक प्रथाएँ गाँव में अत्यधिक शक्तिशाली होती हैं।
- शक्ति का संकेंद्रण: भूमि और रोजगार के साधनों पर उच्च जातियों या भूस्वामियों (प्रभावी जातियों) का नियंत्रण होता है, जिससे गरीब व निम्न वर्ग उन पर निर्भर रहते हैं।
- परिवर्तन की धीमी गति: ग्रामीण शक्ति संरचना बहुत मजबूत होती है और बिखरे हुए भौगोलिक क्षेत्र के कारण वहाँ बदलाव नगरों की तुलना में धीमी गति से आता है।

प्रश्न 10. नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था के सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं?

उत्तर: नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था के सामने मुख्य चुनौतियाँ स्थान (Space) और जनसंख्या के उच्च घनत्व से जुड़ी हैं:

1. **आवास और बस्तियों (Slums) की समस्या:** अत्यधिक महँगी जमीन के कारण गरीब आबादी झोपड़पट्टियों में रहने को मजबूर है, जहाँ बुनियादी सुविधाओं (पानी, बिजली, सफाई) का अभाव होता है और अपराध बढ़ता है।
2. **संरक्षित समुदाय (Gated Communities):** अमीरों द्वारा अपने चारों तरफ दीवारें बनाकर खुद को अलग कर लेने से शहर में सामाजिक दूरी और पृथक्करण बढ़ता है।
3. **जन-परिवहन और यातायात का दबाव:** दूर-दराज स्थित कार्यस्थलों तक लाखों लोगों को रोज पहुँचाना एक बड़ी चुनौती है, जिससे ट्रैफिक जाम और वायु प्रदूषण होता है।
4. **घैटोकरण (Ghettoization):** सांप्रदायिक या नृजातीय तनावों के कारण विशिष्ट समुदायों का सुरक्षा के लिए अलग-अलग मोहल्लों में सिमटना।

अध्याय 3:

पर्यावरण और समाज

परिचय (Introduction)

- **प्रकृति पर हमारी दैनिक निर्भरता:** हम अपने दैनिक जीवन में जिन भी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं (जैसे- स्कूल की वर्दी, कुर्सियाँ, बैग, पेंसिल, भोजन, बिजली, ईंधन आदि), उन सभी के स्रोत मूलतः प्रकृति में ही पाए जाते हैं।
- **संसाधन चक्र और सामाजिक जटिलता:** एक साधारण लकड़ी की कुर्सी भी सीधे जंगल से काटकर कक्षा तक नहीं पहुँचती; इसमें बिजली, डीजल, परिवहन, व्यापार और कई लोगों (जैसे- लकड़हारे, कारिगर, प्रबंधक, वाहन चालक, व्यापारी) का श्रम तथा सामाजिक संस्थाओं का तंत्र शामिल होता है।
- **पारिस्थितिकी (Ecology):** * पारिस्थितिकी से अभिप्राय एक ऐसे जाल से है जहाँ भौतिक और जैविक

व्यवस्थाएँ तथा प्रक्रियाएँ घटित होती हैं, और मनुष्य भी इस पारिस्थितिकी का ही एक अभिन्न अंग है।

- पर्वत, नदियाँ, मैदान, जलमंडल, वायुमंडल और सभी जीव-जंतु पारिस्थितिकी के भाग हैं।
- दोहरी प्रक्रिया (Two-way Process):
- प्रकृति द्वारा समाज का निर्धारण: किसी स्थान का भूगोल वहाँ की जीवनशैली तय करता है (जैसे- सिंधु-गंगा के उपजाऊ मैदान सघन आबादी और गहन कृषि को सहारा देते हैं, जबकि राजस्थान का मरुस्थल मुख्य रूप से घुमंतू पशुपालकों को सहारा देता है)।
- समाज द्वारा प्रकृति में परिवर्तन: मनुष्य अपनी सांस्कृतिक और तकनीकी क्रियाओं से पर्यावरण को बदलता है (जैसे- जंगलों की कटाई, बाँधों का निर्माण, सीमेंट-कंक्रीट के शहर, कृत्रिम खाद और कीटनाशकों का प्रयोग)।
- सामाजिक संगठन की भूमिका: संपत्ति के अधिकार और उत्पादन संबंध यह तय करते हैं कि प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, जल, वन) का उपयोग कौन और कैसे करेगा।

भोपाल औद्योगिक दुर्घटना और समाजशास्त्र (Bhopal Industrial Disaster)

घटना का विवरण:

3 दिसंबर 1984 की रात को भोपाल स्थित यूनियन कार्बाइड (Union Carbide) कीटनाशक कारखाने से अत्यधिक विषैली गैस मिथाइल आइसोसाइनेट (MIC) का रिसाव हुआ। इस दुर्घटना में 4,000 से अधिक लोगों की तात्कालिक मृत्यु हुई और 2,00,000 से अधिक लोग हमेशा के लिए अपंग व गंभीर बीमारियों के शिकार हो गए।

दुर्घटना के कारण और सामाजिक-प्रशासनिक विफलताएँ:

1. सुरक्षा मानकों की अनदेखी: अमेरिका में स्थित कारखानों में कंप्यूटरीकृत चेतावनी प्रणाली अनिवार्य थी, लेकिन भोपाल कारखाने में सुरक्षा के घटिया मानदंड अपनाए गए।
2. प्रशासनिक शिथिलता: 1970 के दशक में नगर निगम ने कारखाने को शहर से बाहर ले जाने का नोटिस दिया था, लेकिन कंपनी के प्रभाव और दान के कारण प्रशासनिक अधिकारियों का तबादला कर दिया गया।
3. राजनीतिक और नौकरशाही संबंध: कंपनी ने शक्तिशाली राजनेताओं और अधिकारियों के रिश्तेदारों को नौकरियों पर रखा तथा बड़े नेताओं को अपने गेस्ट हाउस और वित्तीय लाभ दिए।
4. कर्मचारियों की कटौती: प्लांट घाटे में चल रहा था, इसलिए रखरखाव में ढिलाई बरती गई और प्रशिक्षित कर्मचारियों को हटा दिया गया।

समाजशास्त्र में इसकी भूमिका:

- जोखिम भरा समाज (Risk Society): भोपाल त्रासदी यह दर्शाती है कि आधुनिक औद्योगिक समाज में ऐसी जटिल तकनीकों और रसायनों का प्रयोग किया जाता है, जिनके जोखिमों को नियंत्रित करने में हमारी संस्थाएँ अक्सर विफल हो जाती हैं।
- सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय प्रभाव: इस आपदा का शिकार मुख्यतः कारखाने के आसपास झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले गरीब और कमजोर वर्ग के लोग बने। समृद्ध लोग सुरक्षित स्थानों पर रहते थे।
- संस्थागत विफलता का विश्लेषण: समाजशास्त्र यह समझने में मदद करता है कि केवल तकनीकी खराबी ही आपदा का कारण नहीं होती, बल्कि राजनीतिक भ्रष्टाचार, लाभ कमाने की अंधी दौड़, कमजोर कानून और सामाजिक असमानता ऐसी आपदाओं के असली कारण होते हैं।

पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ और जोखिम (Major Environmental Problems & Risks)

(अ) संसाधनों की क्षीणता (Resource Depletion)

- **भूजल का गिरता स्तर:** कृषि, उद्योगों और शहरों की बढ़ती माँग के कारण पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सदियों से जमा भूजल कुछ ही दशकों में तेजी से खत्म हो रहा है।
- **मृदा (मिट्टी) का क्षरण:** हजारों वर्षों में बनने वाली मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत भू-कटाव, जल भराव, अत्यधिक रासायनिक खादों और ईट-भट्टों के कारण नष्ट हो रही है।
- **जैव विविधता का नुकसान:** कृषि और आवासीय विस्तार के कारण जंगल, घास के मैदान और आर्द्रभूमि (Wetlands) नष्ट हो रहे हैं, जिससे बाघों और अन्य दुर्लभ जीवों की प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं।

(ब) प्रदूषण (Pollution)

1. वायु प्रदूषण (Air Pollution):

- **बाह्य वायु प्रदूषण:** उद्योगों और वाहनों से निकलने वाली विषैली गैसों से शहरों में श्वास संबंधी बीमारियाँ फैलाती हैं।
- **आंतरिक वायु प्रदूषण (Indoor Pollution):** ग्रामीण इलाकों में खाना बनाने के लिए गीली लकड़ी, उपले और अनुपयुक्त चूल्हों के धुएँ से महिलाएँ गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करती हैं। (WHO के अनुसार 2012 में 70 लाख मौतों का कारण वायु प्रदूषण था)।

2. जल प्रदूषण (Water Pollution):

उद्योगों के जहरीले अपशिष्ट, घरेलू नालों के कचरे और खेतों से बहकर आने वाले रासायनिक कीटनाशकों व खादों से नदियाँ, झीलें और भूमिगत जल प्रदूषित हो रहे हैं।

2. ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution):

वाहनों के हॉर्न, निर्माण कार्य, लाउडस्पीकर और औद्योगिक गतिविधियों से शहरों में बहरापन और मानसिक तनाव बढ़ रहा है।

(स) वैश्विक तापमान वृद्धि / ग्लोबल वार्मिंग (Global Warming)

- **कारण:** कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों के अत्यधिक उत्सर्जन से सूर्य की गर्मी वायुमंडल में रुक जाती है।
- **परिणाम:** ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है जिससे तटीय क्षेत्र डूबने का खतरा है, और अनियंत्रित जलवायु परिवर्तन (अतिवृष्टि, अनावृष्टि) हो रहा है।

(द) जेनेटिकली मॉडिफाइड ऑर्गेनिज्म (Genetically Modified Organisms - GMOs)

- **प्रक्रिया:** जीन-स्प्लिसिंग (Gene-splicing) द्वारा एक जीव के वांछित जीन को दूसरी प्रजाति में डालकर फसलों का आकार या कीट-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जाती है (जैसे- बीटी कॉटन / Bt Cotton)।
- **जोखिम:** मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी पर इसके दीर्घकालिक प्रभावों की पूरी जानकारी नहीं है। साथ ही, किसान बीजों के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं।

(य) प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित पर्यावरण विनाश (Natural & Man-made Disasters)

- सुनामी (2004), चेरनोबिल परमाणु हादसा, भोपाल गैस त्रासदी, और उद्योगों से निकले विषैले पदार्थों के रिसाव से पर्यावरण और मानव जीवन का अपूरणीय विनाश होता है।

सतत विकास (Sustainable Development)

अवधारणा तथा परिभाषा:

- ब्रंटलैंड रिपोर्ट (Brundtland Report, 1987) के अनुसार: "सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की जरूरतों को पूरा करने की आने वाली पीढ़ियों की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है।"

मुख्य विचार एवं आयाम:

- गरीबों की मूलभूत आवश्यकताएँ: सतत विकास में दुनिया के निर्धनतम लोगों की भोजन, जल और स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिक आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है।
- पर्यावरण की क्षमता की सीमाएँ: प्रौद्योगिकी और सामाजिक संगठन को इस प्रकार नियंत्रित करना चाहिए कि पर्यावरण पर उसकी सहने की क्षमता से अधिक बोझ न पड़े।
- उपभोक्तावाद पर रोक: पूँजीवादी विकास का मुख्य आधार अंधाधुंध खपत (Consumption) है। सतत विकास इस बात पर बल देता है कि प्रकृति के संसाधनों का न्यायसंगत उपयोग हो, न कि लाभ के लिए बेदरदी से दोहन।
- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs): संयुक्त राष्ट्र द्वारा 17 वैश्विक लक्ष्यों और 169 उप-लक्ष्यों को अपनाया गया है ताकि 2030 तक गरीबी खत्म हो और पृथ्वी सुरक्षित रहे।

शब्दावली (Glossary)

- आर्द्रता विज्ञान (Hydrology): जल तथा इसके प्रवाह का विज्ञान अथवा किसी क्षेत्र के जल संसाधनों का वैज्ञानिक अध्ययन।
- वनोन्मूलन (Deforestation): कृषि, औद्योगीकरण या शहरीकरण के लिए वनों और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करना।
- ग्रीनहाउस (Greenhouse): पौधों को अत्यधिक ठंड से बचाने के लिए बनाया गया ढँका हुआ ढाँचा, जिसके अंदर का तापमान बाहर से अधिक रहता है।
- उत्सर्जन (Emission): मानवीय और औद्योगिक गतिविधियों (जैसे वाहन, कारखाने) के कारण वायुमंडल में छोड़ी गई गैसों और धुआँ।
- बहि: प्रवाही धारा (Effluent): औद्योगिक प्रक्रियाओं के बाद कारखानों से बाहर बहने वाला जहरीला तरल कचरा।
- एक्यूफर्स (Aquifers): प्राकृतिक रूप से बनी भूमिगत चट्टानी संरचनाएँ जहाँ वर्षा का जल जमा होता है।
- मोनोकल्चर (Monoculture): किसी व्यापक क्षेत्र में विविधता समाप्त करके केवल एक ही प्रकार की फसल या

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Textbook Exercise Answers)

प्रश्न 1. पारिस्थितिकी से आपका क्या अभिप्राय है? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर: पारिस्थितिकी (Ecology) से अभिप्राय एक ऐसे जटिल जाल या तंत्र से है जहाँ भौतिक (अजैविक) और जैविक व्यवस्थाएँ तथा प्रक्रियाएँ एक-दूसरे के साथ निरंतर अंतःक्रिया करती हैं, और मनुष्य भी इस तंत्र का एक अनिवार्य अंग है। इसके अंतर्गत पर्वत, नदियाँ, मैदान, जल, वायु, मिट्टी तथा सभी प्रकार के वनस्पति और जीव-जंतु शामिल हैं। किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकी यह तय करती है कि वहाँ किस प्रकार का जीवन पनपेगा। उदाहरण के लिए, रेगिस्तान की पारिस्थितिकी वहाँ के पौधों (नागफनी) और जंतुओं (ऊँट) को कम पानी में रहने के अनुकूल बनाती है।

प्रश्न 2. पारिस्थितिकी सिर्फ प्राकृतिक शक्तियों तक ही सीमित क्यों नहीं है?

उत्तर: पारिस्थितिकी सिर्फ प्राकृतिक शक्तियों तक ही सीमित नहीं है क्योंकि समय के साथ **मानवीय और सामाजिक हस्तक्षेपों** ने प्रकृति को गहराई से बदल दिया है:

1. **मानवीय हस्तक्षेप का प्रभाव:** आज नदियाँ, जंगल और जलवायु केवल प्राकृतिक नियमों से संचालित नहीं होते। नदियों पर बाँध बनाना, जंगलों की कटाई, और शहरों का निर्माण पूरी तरह सामाजिक क्रियाएँ हैं।
2. **प्राकृतिक आपदाओं का मानवीय कारण:** बाढ़ या अकाल जैसी आपदाएँ केवल प्राकृतिक नहीं होतीं; पहाड़ों पर अंधाधुंध कटाई से नदियों में बाढ़ आती है और ग्लोबल वार्मिंग से अकाल पड़ता है।
3. **मानव-निर्मित पर्यावरण:** सीमेंट, ईंट, कंक्रीट के शहर, कृत्रिम खाद, कीटनाशक और बीटी फसलें स्पष्ट रूप से मनुष्य द्वारा निर्मित पारिस्थितिकी के उदाहरण हैं। इसलिए, पारिस्थितिकी प्राकृतिक और सामाजिक शक्तियों के आपसी संबंधों का परिणाम है।

प्रश्न 3. उस दोहरी प्रक्रिया का वर्णन करें जिसके कारण सामाजिक पर्यावरण का उद्भव होता है?

उत्तर: सामाजिक पर्यावरण का उद्भव **दोहरी प्रक्रिया (Two-way Process)** द्वारा होता है:

1. **प्रकृति द्वारा समाज को आकार देना:** किसी स्थान का भौतिक पर्यावरण वहाँ के लोगों की संस्कृति, व्यवसाय और समाज को तय करता है। उदाहरण के लिए, गंगा-सिंधु के उपजाऊ मैदान गहन कृषि और सघन आबादी वाले विशाल समाजों को जन्म देते हैं, जबकि राजस्थान का मरुस्थल घुमंतू पशुपालक समाजों को आकार देता है।
2. **समाज द्वारा प्रकृति को आकार देना:** मनुष्य अपनी तकनीकों, सामाजिक संगठनों और आर्थिक प्रणालियों के माध्यम से प्रकृति को बदलता है। उदाहरण के लिए, पूँजीवादी व्यवस्था ने दुनिया भर के वनों को काटा, कारखाने लगाए और शहरों में वायु प्रदूषण व सड़कों का जाल बिछाकर प्राकृतिक भू-दृश्य को पूरी तरह बदल दिया।

इन दोनों प्रक्रियाओं की परस्पर क्रिया से 'सामाजिक पर्यावरण' का निर्माण होता है।

प्रश्न 4. सामाजिक संस्थाएँ कैसे तथा किस प्रकार से पर्यावरण तथा समाज के आपसी रिश्तों को आकार देती हैं?

उत्तर: सामाजिक संस्थाएँ (जैसे- सरकार, संपत्ति के नियम, बाजार, परिवार और जाति) पर्यावरण और समाज के संबंधों को निम्नलिखित तरीकों से आकार देती हैं:

1. **संपत्ति के संबंध (Property Relations):** यह तय करते हैं कि संसाधनों पर किसका अधिकार होगा। यदि वनों पर सरकार का नियंत्रण है, तो वह तय करती है कि लकड़ी का पट्टा किसी निजी कंपनी को दिया जाएगा या ग्रामीणों को वन उत्पाद बीनने की छूट होगी।
2. **श्रम का विभाजन और लिंग (Gender & Division of Labour):** ग्रामीण भारत में पानी और ईंधन की लकड़ी जुटाने का काम महिलाओं का होता है। पर्यावरण क्षरण (पानी या लकड़ी की कमी) का सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है, यद्यपि संसाधनों पर उनका कोई स्वामित्व नहीं होता।
3. **बाजार और मूल्य प्रणाली:** पूँजीवादी संस्थाएँ प्रकृति को केवल लाभ कमाने की 'वस्तु' मानती हैं, जिससे नदियों और वनों का दोहन होता है। वहीं पारंपरिक संस्थाएँ प्रकृति को पवित्र मानकर उसके संरक्षण पर बल देती हैं।

प्रश्न 5. पर्यावरण व्यवस्था समाज के लिए एक महत्वपूर्ण तथा जटिल कार्य क्यों है?

उत्तर: पर्यावरण व्यवस्था समाज के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल कार्य है क्योंकि:

1. **पूर्वानुमान की कठिनाता:** जैव-भौतिक प्रक्रियाएँ अत्यधिक जटिल होती हैं। हम भूकंप, सुनामी या अचानक आने वाले जलवायु परिवर्तनों का सटीक पूर्वानुमान नहीं लगा सकते।
2. **जटिल प्रौद्योगिकी के जोखिम:** आधुनिक औद्योगिकीकरण में ऐसी जटिल तकनीकों (जैसे- परमाणु ऊर्जा, रासायनिक संयंत्र, जीएम फसलें) का प्रयोग होता है, जहाँ एक छोटी सी मानवीय भूल भोपाल गैस त्रासदी या चेरनोबिल जैसी महा-आपदा को जन्म दे सकती है।
3. **हितों का टकराव:** समाज के विभिन्न समूहों (उद्योगपति, किसान, जनजातीय लोग, ठेकेदार) के हित पर्यावरण को लेकर अलग-अलग होते हैं। इसलिए कोई भी पर्यावरणीय नीति बनाना और लागू करना जटिल हो जाता है।

प्रश्न 6. प्रदूषण संबंधित प्राकृतिक विपदाओं के मुख्य रूप कौन-कौन से हैं?

उत्तर: प्रदूषण से जुड़ी मुख्य पर्यावरण विपदाओं और जोखिमों को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है:

1. **वायु प्रदूषण आपदाएँ:** कारखानों से निकलने वाली विषैली गैसों का रिसाव (जैसे भोपाल गैस त्रासदी, 1984), उद्योगों और वाहनों का धुआँ तथा गाँवों में चूल्हे का धुएँ से होने वाली फेफड़ों और हृदय की गंभीर बीमारियाँ।
2. **जल प्रदूषण और अपशिष्ट विपदाएँ:** नदियों में कारखानों का विषैला रसायन (बहिःप्रवाही) और खेतों के कीटनाशक मिलने से पीने का पानी जहरीला होना तथा जलजनित महामारियाँ फैलना।
3. **औद्योगिक एवं नाभिकीय दुर्घटनाएँ:** परमाणु रिएक्टरों से रेडियोधर्मी रिसाव (जैसे चेरनोबिल हादसा) या यूरोपीय देशों में फैली 'मैड काऊ' जैसी बीमारियाँ जो औद्योगिक खाद्य संवर्धन का परिणाम थीं।

प्रश्न 7. संसाधनों की क्षीणता से संबंधित पर्यावरण के प्रमुख मुद्दे कौन-कौन से हैं?

उत्तर: संसाधनों की क्षीणता (Resource Depletion) से संबंधित प्रमुख मुद्दे:

1. **भूजल का अत्यधिक दोहन:** ट्यूबवेलों की गहरी खुदाई के कारण पंजाब, हरियाणा और यूपी में भूमिगत जलस्तर खतरनाक स्तर तक गिर गया है।
2. **मृदा (मिट्टी) का क्षरण:** ईट-भट्टों, भू-कटाव, खारेपन और रासायनिक खादों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की

उपजाऊ ऊपरी परत नष्ट हो रही है।

3. **वनों और जैव विविधता की क्षति:** कृषि, खनन और निर्माण कार्यों के लिए वनों की कटाई से प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं, जिससे दुर्लभ वन्यजीवों (जैसे बाघ) की संख्या तेजी से घट रही है।
4. **जीवाश्म ईंधन (पेट्रोलियम व कोयला) की समाप्ति:** गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का तेजी से खत्म होना।

प्रश्न 8. पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं। कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पर्यावरण की समस्याएँ केवल वैज्ञानिक या तकनीकी समस्याएँ नहीं हैं; वे मूलतः **सामाजिक समस्याएँ** हैं क्योंकि:

1. **असमान प्रभाव:** पर्यावरण के विनाश का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर समान नहीं पड़ता। समृद्ध वर्ग धन के बल पर शुद्ध पानी, एयर-कंडीशनर या सुरक्षित स्थानों में रहकर बच जाता है, जबकि गरीब, मजदूर और बेघर लोग प्रदूषण और आपदाओं का सबसे पहला शिकार बनते हैं।
2. **सामाजिक असमानता से उत्पत्ति:** सामाजिक पारिस्थितिकी (Social Ecology) के अनुसार, पर्यावरण संकट की जड़ें समाज की विषमताओं में हैं। जब संपन्न किसान अपने खेतों के लिए सारे भूजल को नलकूपों से खींच लेते हैं, तो गरीब ग्रामीणों के पीने के कुएँ सूख जाते हैं।
3. **संसाधनों के आवंटन में शक्ति का खेल:** बाँधों या अभ्यारण्यों के निर्माण से विस्थापित होने वाले लोग हमेशा गरीब और जनजातीय वर्ग के होते हैं, जबकि उसका लाभ (बिजली, पानी) शहरों और उद्योगपतियों को मिलता है।

प्रश्न 9. सामाजिक पारिस्थितिकी से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: सामाजिक पारिस्थितिकी (Social Ecology) एक ऐसी विचारधारा और दृष्टिकोण है जो यह मानती है कि पर्यावरण की वर्तमान सभी समस्याएँ (प्रदूषण, संसाधनों का दोहन) वास्तव में समाज की गहरी **सामाजिक समस्याओं** (जैसे असमानता, वर्ग भेद, पितृसत्ता और पूँजीवादी शोषण) से उत्पन्न हुई हैं।

- **मुर्रे बुकचिन (Murray Bookchin):** इस विचारधारा के प्रमुख विचारक थे।
- इसके अनुसार, जब तक समाज में एक समूह दूसरे समूह का शोषण करता रहेगा, तब तक मनुष्य प्रकृति का भी बेदरदी से शोषण करता रहेगा।
- पर्यावरण संकट को दूर करने के लिए समाज के आंतरिक ढाँचे और सामाजिक संबंधों (जैसे स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर) में न्यायपूर्ण परिवर्तन लाना आवश्यक है।

प्रश्न 10. पर्यावरण संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दे जिनके बारे में आपने पढ़ा या सुना हो उनका वर्णन कीजिए। (अध्याय के अतिरिक्त)

उत्तर: अध्याय के अतिरिक्त पर्यावरण से जुड़े कुछ प्रमुख और चर्चित विवादास्पद मुद्दे निम्नलिखित हैं:

1. **नर्मदा बचाओ आंदोलन और बड़े बाँधों का विवाद:**

- **मुद्दा:** नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर जैसे विशाल बाँधों के निर्माण का विरोध।
- **विवाद:** एक तरफ सरकार इसे विकास, बिजली और सिंचाई के लिए आवश्यक मानती है, वहीं दूसरी तरफ पर्यावरणविद् और विस्थापित आदिवासी इसे लाखों लोगों के बेघर होने, जंगलों के डूबने और पारिस्थितिक विनाश का कारण मानते हैं।

2. हिमालयी क्षेत्रों में चार धाम ऑल-वेदर रोड और खनन विवाद (जैसे जोशीमठ का धंसना):
 - मुद्दा: उत्तराखंड के संवेदनशील पहाड़ों को काटकर चौड़ी सड़कें बनाना और सुरंगें खोदना।
 - विवाद: पर्यटन और सामरिक दृष्टि से इसे विकास माना गया, परंतु इसके कारण भूस्खलन, पहाड़ों में दरारें और पूरे शहरों के धंसने का खतरा पैदा हो गया है।
3. पराली (Crop Residue) जलाने का विवाद:
 - मुद्दा: उत्तर भारत (पंजाब, हरियाणा) में किसानों द्वारा धान की कटाई के बाद बची पराली को जलाना।
 - विवाद: इससे दिल्ली-एनसीआर में जानलेवा स्मॉग और वायु प्रदूषण होता है। किसान तर्क देते हैं कि पराली हटाने की मशीनें बहुत महँगी हैं और विकल्प न होने के कारण वे ऐसा करने को मजबूर हैं।

अध्याय 4:

पाश्चात्य समाजशास्त्री - एक परिचय

परिचय (Introduction)

- 'क्रांति के युग की संतान': समाजशास्त्र को कभी-कभी 'क्रांति के युग की संतान' कहा जाता है। इसका कारण यह है कि समाजशास्त्र का जन्म 19वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में हुआ, जहाँ विगत 300 वर्षों में हुए तीन महान क्रांतिकारी परिवर्तनों ने संपूर्ण मानव समाज के चिंतन और जीवन शैली को बदल दिया।
- शास्त्रीय समाजशास्त्र के तीन स्तंभ: इस अध्याय में तीन महान पाश्चात्य समाजशास्त्रियों के विचारों का अध्ययन किया जाता है, जिन्होंने समाजशास्त्र की नींव रखी:
 1. कार्ल मार्क्स (Karl Marx: 1818–1883) - वर्ग संघर्ष और पूँजीवाद का विश्लेषण।
 2. एमिल दुर्खाइम (Émile Durkheim: 1858–1917) - सामाजिक तथ्य और श्रम विभाजन।
 3. मैक्स वेबर (Max Weber: 1864–1920) - व्याख्यात्मक समाजशास्त्र और नौकरशाही।

समाजशास्त्र का संदर्भ (Context of Sociology)

आधुनिक यूरोप का उद्भव और समाजशास्त्र की स्थापना तीन प्रमुख प्रक्रियाओं के बौद्धिक व सामाजिक परिणामों की

देन है:

[यूरोपीय आधुनिकता के 3 मुख्य स्रोत]

- 1. ज्ञानोदय (बौद्धिक क्रांति / तर्क का युग)
- 2. फ्रांसीसी क्रांति (राजनीतिक संप्रभुता व समानता)
- 3. औद्योगिक क्रांति (आर्थिक व उत्पादन प्रणाली में बदलाव)

इन तीनों प्रक्रियाओं ने केवल यूरोप को ही नहीं बदला, बल्कि उपनिवेशवाद के माध्यम से पूरे विश्व के सामाजिक ढाँचे को प्रभावित किया। इन्हीं परिवर्तनों को वैज्ञानिक रूप से समझने के लिए 'समाजशास्त्र' का जन्म हुआ।

1. ज्ञानोदय या प्रबोधन (Enlightenment / Age of Reason)

- **समय काल:** 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 18वीं शताब्दी का समय।
- **तर्क और विवेक (Reason) की प्रतिष्ठा:** ज्ञानोदय ने घोषणा की कि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। धार्मिक अंधविश्वासों और दैवीय आस्था के स्थान पर 'तर्क', 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' और 'धर्मनिरपेक्षता' को सर्वोच्च स्थान दिया गया।
- **व्यक्ति (Individual) की अवधारणा:** मनुष्य केवल एक जीव नहीं रहा, बल्कि वह ज्ञान का निर्माता और उपभोक्ता (व्यक्ति) बन गया।
- **मानव समाज का वैज्ञानिक अध्ययन:** यह माना गया कि चूँकि समाज मनुष्यों द्वारा बनाया गया है, इसलिए प्राकृतिक नियमों की तरह समाज का भी युक्तिसंगत और वैज्ञानिक विश्लेषण संभव है।

2. फ्रांसीसी क्रांति (French Revolution - 1789)

- **राजनीतिक संप्रभुता और समानता:** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने घोषणा की कि राजनीतिक शक्ति राजा या ईश्वर में नहीं, बल्कि जनता (नागरिकों) में निहित है।
- **विशेषाधिकारों की समाप्ति:** इसने जन्म पर आधारित विशेषाधिकारों, कुलीन वर्ग के वर्चस्व और धार्मिक संस्थाओं (चर्च) के अत्याचारी शासन का अंत किया।
- **कृषिदासों (Serfs) की मुक्ति:** किसानों को जागीरदारों और चर्च के भारी करों से मुक्ति दिलाई गई।
- **क्रांति के तीन अमर नारे:** 1. स्वतंत्रता (Liberty) 2. समानता (Equality) 3. बंधुत्व (Fraternity)
- **सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का विभाजन:** शिक्षा को सार्वजनिक (राज्य का) विषय माना गया, जबकि धर्म व परिवार को व्यक्तिगत (निजी) क्षेत्र माना गया।

3. औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

- **शुरुआत:** 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन से प्रारंभ।
- **मुख्य पहलू:**
 1. तकनीक व ऊर्जा का प्रयोग: वाष्प इंजन और सूत कातने वाली मशीनों (जैसे स्पिनिंग जेनी) के आविष्कार से बड़े

पैमाने पर उत्पादन (Mass Production) संभव हुआ।

2. **कारखाना प्रणाली (Factory System):** उत्पादन घरों और छोटे कुटीर उद्योगों से निकलकर विशाल कारखानों में होने लगा।

- **सामाजिक प्रभाव:**
- **नगरीकरण:** काम की तलाश में लाखों ग्रामीण शहरों में आ बसे।
- **श्रमिक वर्ग का शोषण:** कम मजदूरी, 14-16 घंटे काम, खतरनाक परिस्थितियाँ तथा बाल-श्रम व महिला शोषण बढ़ा।
- **गंदी बस्तियाँ (Slums):** शहरों में अमीर वर्ग के साथ-साथ अत्यंत सघन और अस्वास्थ्यकर झुग्गी-झोपड़ियों का निर्माण हुआ।
- **नए सामाजिक वर्ग:** समाज स्पष्ट रूप से दो वर्गों में बँट गया - **पूँजीपति (Bourgeoisie)** और **श्रमिक/सर्वहारा (Proletariat)**।

कार्ल मार्क्स (Karl Marx: 1818–1883)

संक्षिप्त परिचय

कार्ल मार्क्स का जन्म जर्मनी के राइनलैंड प्रांत में हुआ था। उनके क्रांतिकारी विचारों के कारण उन्हें जर्मनी, फ्रांस और ऑस्ट्रिया से निर्वासित किया गया, जिसके बाद उन्होंने अपना अधिकांश जीवन लंदन (ब्रिटेन) में बिताया। मार्क्स ने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' (1848) और 'दास कैपिटल' (1867) जैसी कालजयी रचनाएँ लिखीं।

(अ) ऐतिहासिक भौतिकवाद तथा उत्पादन के साधन

मार्क्स के अनुसार, मानव इतिहास की नींव आर्थिक (भौतिक) व्यवस्था पर टिकी है।

- **आधार और अधिसंरचना (Base and Superstructure):**
- **आधार (Base - नींव):** समाज का आर्थिक ढाँचा (उत्पादन की शक्तियाँ + उत्पादन के संबंध)।
- **अधिसंरचना (Superstructure):** अर्थव्यवस्था के आधार पर बनी संस्थाएँ—जैसे कानून, धर्म, राजनीति, कला, संस्कृति और विचार।
- मार्क्स का प्रसिद्ध कथन: "मानव की चेतना उसके सामाजिक अस्तित्व को तय नहीं करती, बल्कि उसका सामाजिक अस्तित्व उसकी चेतना को तय करता है।"

अधिसंरचना (Superstructure) (कानून, धर्म, राजनीति, संस्कृति, विचार)
आधार (Economic Base) उत्पादन की शक्तियाँ (तकनीक, श्रम) + उत्पादन संबंध

(ब) अलगाव का सिद्धांत (Theory of Alienation)

पूँजीवादी व्यवस्था में मज़दूर अपने कार्य और जीवन से कट जाता है। इसे अलगाव कहते हैं, जो 4 स्तरों पर होता है:

- 1. उत्पादित वस्तु से अलगाव: मज़दूर जिस वस्तु का निर्माण करता है, उस पर उसका कोई अधिकार नहीं होता।
- 2. उत्पादन प्रक्रिया से अलगाव: काम सृजनात्मक न होकर केवल यांत्रिक (लीवर खींचना/बटन दबाना) बन जाता है।
- 3. अन्य मनुष्यों से अलगाव: बाज़ार व्यवस्था सामाजिक संबंधों को केवल मौद्रिक/प्रतिस्पर्धी संबंधों में बदल देती है।
- 4. स्वयं (प्रकृति) से अलगाव: मनुष्य अपनी मानवीय क्षमता और स्वतंत्रता खो बैठता है।

वर्ग संघर्ष (Class Struggle)

- वर्ग की परिभाषा: उत्पादन प्रक्रिया में समान स्थान और संपत्ति संबंधों के आधार पर जुड़े लोगों का समूह एक 'वर्ग' कहलाता है।
- इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है: कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो में मार्क्स ने लिखा: "अबतक के विद्यमान सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।"

इतिहास के विभिन्न चरणों में वर्ग संरचना:

ऐतिहासिक चरण	शोषक वर्ग (प्रभुत्वशाली)	शोषित वर्ग (अधीनस्थ)
1. आदिम साम्यवाद	कोई वर्ग नहीं (साझा संपत्ति)	कोई वर्ग नहीं
2. दास प्रथा	स्वामी (Master)	दास (Slave)
3. सामंतवाद	ज़मींदार/सामंत (Lord)	कृषिदास/सर्फ (Serf)
4. पूँजीवाद	पूँजीपति/बुर्जुआ (Bourgeoisie)	मज़दूर/सर्वहारा (Proletariat)
5. समाजवाद/साम्यवाद	वर्गहीन समाज (भविष्य की अवधारणा)	वर्गहीन समाज

- वर्ग चेतना (Class Consciousness): जब श्रमिक वर्ग अपने साझा हितों और शोषक वर्ग के खिलाफ जागरूक होकर संगठित होता है, तब 'स्वयं में वर्ग' (Class-in-itself) बदलकर 'स्वयं के लिए वर्ग' (Class-for-itself) बन जाता है, जिससे क्रांति का जन्म होता है।

एमिल दुर्खाइम (Émile Durkheim: 1858–1917)

संक्षिप्त परिचय

दुर्खाइम फ्रांस के प्रसिद्ध समाजशास्त्री थे और वे 1913 में पेरिस विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रथम प्रोफेसर बने।
दुर्खाइम ने समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र और वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
दुर्खाइम की समाजशास्त्रीय दृष्टि: सामाजिक तथ्य (Social Facts)

- सामाजिक तथ्य क्या हैं?

दुर्खाइम के अनुसार, सामाजिक तथ्य आचरण, सोच और भावना के वे तरीके हैं जो व्यक्ति के बाहर. (External) विद्यमान होते हैं और व्यक्ति पर एक बाध्यकारी/दबावकारी (Coercive) शक्ति रखते हैं।

- विशेषताएँ:

- बाह्यता (Externality): ये व्यक्ति के जन्म से पहले भी मौजूद होते हैं (जैसे भाषा, धर्म, कानून, मुद्रा)।
 - बाध्यता (Coercion): यदि व्यक्ति इनका पालन नहीं करता, तो समाज उसे दंडित करता है या अस्वीकार करता है।
- दुर्खाइम का नियम: "सामाजिक तथ्यों को वस्तुओं (Things) की तरह समझा जाना चाहिए।" इनका आनुभविक (Empirical) और प्रत्यक्षवादी अध्ययन किया जा सकता है (जैसे दुर्खाइम का 'आत्महत्या' पर अध्ययन)।

समाज में श्रम विभाजन (Division of Labour in Society)

दुर्खाइम ने अपनी प्रथम पुस्तक 'द डिवीज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी' (1893) में समाज के उद्विकास को श्रम विभाजन और सामाजिक एकता (Solidarity) के आधार पर समझाया।

यांत्रिक एकता बनाम सावयवी एकता (तुलनात्मक तालिका)

आधार	यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity)	सावयवी एकता (Organic Solidarity)
समाज का प्रकार	पारंपरिक, आदिम व सरल समाज।	आधुनिक, औद्योगिक व जटिल समाज।
जनसंख्या व घनत्व	कम जनसंख्या और कम घनत्व।	उच्च जनसंख्या और अत्यधिक घनत्व।
श्रम विभाजन	बहुत सरल (मुख्यतः आयु व लिंग पर आधारित)।	अत्यधिक जटिल और विशेषीकृत (Specialized)।
व्यक्तिगत स्वतंत्रता	न के बराबर; समूह की चेतना सर्वोपरि।	उच्च व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भिन्न पहचान।

सामाजिक संहति का आधार	सदस्यों की एकरूपता व समान अनुभव।	परस्पर निर्भरता (Interdependence)।
कानून का प्रकार	दमनकारी कानून (Repressive Law) - उद्देश्य विचलन पर कठोर सजा/प्रतिशोध देना।	क्षतिपूरक कानून (Restitutive Law) - उद्देश्य व्यवस्था व नुकसान की भरपाई/सुधार करना।

मैक्स वेबर (Max Weber: 1864–1920)

संक्षिप्त परिचय

मैक्स वेबर जर्मनी के महान समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री और दार्शनिक थे। उन्होंने समाजशास्त्र को मानवीय क्रियाओं के अर्थ को समझने वाला विषय माना। उनकी प्रमुख कृतियों में 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' (1905) तथा 'इकोनॉमी एंड सोसाइटी' शामिल हैं।

वेबर और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र (Interpretive Sociology)

(अ) सामाजिक क्रिया और समानुभूति (Verstehen / Empathy)

- सामाजिक क्रिया (Social Action):** वेबर के अनुसार, समाजशास्त्र सामाजिक क्रिया का अध्ययन है। कोई क्रिया तभी 'सामाजिक क्रिया' बनती है जब कर्ता (Actor) उसमें कोई विषयगत अर्थ (Subjective Meaning) जोड़ता है और दूसरों के व्यवहार से प्रभावित होता है।
- समानुभूतिक समझ (Verstehen):** समाजशास्त्री को किसी घटना का अध्ययन बाहर से नहीं करना चाहिए, बल्कि काल्पनिक रूप से स्वयं को कर्ता के स्थान पर रखकर उस अर्थ को समझना चाहिए जो कर्ता स्वयं अपनी क्रिया को देता है।

(ब) मूल्य तटस्थता और आदर्श प्रारूप (Ideal Type)

- मूल्य तटस्थता (Value Neutrality):** अध्ययन करते समय समाजशास्त्री को अपने निजी पूर्वाग्रहों, धार्मिक या राजनीतिक विचारों को अलग रखना चाहिए।
- आदर्श प्रारूप (Ideal Type):** यह समाजशास्त्र में विश्लेषण और तुलना करने का एक मानसिक/अवधारणात्मक मॉडल (Conceptual Tool) है। यह वास्तविकता का हू-ब-हू चित्र नहीं होता, बल्कि किसी सामाजिक परिघटना की मुख्य विशेषताओं को बढ़ाकर बनाया गया एक शुद्ध ढाँचा होता है (जैसे- नौकरशाही का आदर्श प्रारूप)।

(स) सत्ता के तीन आदर्श प्रारूप (Three Types of Authority)

1. **पारंपरिक सत्ता (Traditional Authority):** प्रथाओं, परंपराओं और वंशानुगत नियमों पर आधारित (जैसे- राजा, कबीले का मुखिया)।
2. **करिश्माई सत्ता (Charismatic Authority):** नेता के असाधारण व्यक्तित्व, भक्ति और दैवीय गुणों पर आधारित (जैसे- महात्मा गांधी, ईसा मसीह)।
3. **तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता (Rational-Legal Authority):** लिखित कानूनों, नियमों और पदों की मर्यादा पर आधारित (जैसे- आधुनिक नौकरशाही, राष्ट्रपति, जज)।

नौकरशाही (Bureaucracy) और इसकी 5 मुख्य विशेषताएँ

नौकरशाही तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता का सबसे स्पष्ट और आधुनिक संगठन रूप है। यह सार्वजनिक क्षेत्र को निजी क्षेत्र से अलग करता है।

नौकरशाही की 5 प्रमुख विशेषताएँ:

1. **अधिकारियों का प्रकार्य (Official Jurisdictional Areas):**
 - नौकरशाही में निश्चित और लिखित नियमों, कानूनों व प्रशासनिक विधानों द्वारा तय क्षेत्राधिकार होते हैं।
 - नियमित कार्यों को सरकारी कर्तव्यों के रूप में बाँटा जाता है और उन्हें पूरा करने के लिए केवल योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती है।
2. **पदों का सोपानिक क्रम (Hierarchy of Offices):**
 - अधिकारियों और कार्यालयों में एक उच्च-निम्न (सोपानिक) श्रृंखला होती है।
 - उच्च अधिकारी अपने निचले अधिकारियों के कार्यों का निरीक्षण करते हैं, और निचले फैसलों के खिलाफ उच्च स्तर पर अपील की जा सकती है।
3. **लिखित दस्तावेजों की विश्वसनीयता (Written Documents / Files):**
 - संपूर्ण प्रबंधन लिखित फाइलों, अभिलेखों (Records) और दस्तावेजों पर आधारित होता है।
 - 'कार्यालय' (Office) का कार्य अधिकारी के व्यक्तिगत व निजी जीवन से बिल्कुल अलग होता है।
4. **कार्यालय प्रबंधन तथा विशिष्ट प्रशिक्षण (Office Management & Training):**
 - आधुनिक कार्यालय प्रबंधन के लिए कर्मचारियों को विशेष योग्यता और तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
5. **कार्यालयी आचरण (Official Conduct):**
 - कर्मचारी का आचरण निष्पक्ष, निर्वैयक्तिक (Impersonal) और कानून के सख्त नियमों से बंधा होता है।
 - पदधारी और पद अलग-अलग होते हैं; पद पर व्यक्ति का निजी अधिकार नहीं होता।

शब्दावली (Glossary)

1. **अलगाव (Alienation):** मार्क्स द्वारा दी गई अवधारणा; पूँजीवादी व्यवस्था में मज़दूर का अपने श्रम, उत्पाद, समाज और स्वयं से कट जाना।

2. **ज्ञानोदय (Enlightenment):** 18वीं सदी का यूरोपीय वैचारिक दौर जिसमें धर्मशास्त्र के स्थान पर मानव विवेक, तर्क और विज्ञान को प्रामाणिक माना गया।
3. **सामाजिक तथ्य (Social Facts):** दुर्खाइम के अनुसार, व्यक्ति के बाहर विद्यमान आचरण, सोच और भावना के तरीके जो व्यक्ति पर बाध्यकारी प्रभाव डालते हैं।
4. **उत्पादन के साधन (Means of Production):** वे सभी भौतिक संसाधन (भूमि, कारखाना, मशीनें, तकनीक) जो वस्तुओं के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं।
5. **उत्पादन के तरीके (Mode of Production):** किसी ऐतिहासिक काल में उत्पादन की संपूर्ण व्यवस्था (उत्पादन शक्तियाँ + उत्पादन संबंध)।
6. **बुर्जुआ (Bourgeoisie):** पूँजीवादी समाज का वह शासक/मालिक वर्ग जिसके पास उत्पादन के साधनों का मालिकाना हक होता है।
7. **सर्वहारा (Proletariat):** पूँजीवादी समाज का संपत्तिविहीन मज़दूर वर्ग जो आजीविका के लिए अपना श्रम बेचने पर मजबूर होता है।
8. **सावयवी एकता (Organic Solidarity):** आधुनिक जटिल समाजों में अत्यधिक श्रम विभाजन और परस्पर निर्भरता पर आधारित एकता।
9. **यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity):** सरल व पारंपरिक समाजों में पाई जाने वाली एकता जो सदस्यों की एकरूपता पर आधारित होती है।
10. **समानुभूतिक समझ (Verstehen):** वेबर का सिद्धांत; सामाजिक कर्ता के दृष्टिकोण से उसकी क्रिया के आंतरिक अर्थ को समझना।
11. **आदर्श प्रारूप (Ideal Type):** सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण और तुलना के लिए निर्मित एक शुद्ध विश्लेषणात्मक मॉडल।
12. **नौकरशाही (Bureaucracy):** तर्कसंगत-वैधानिक नियमों पर आधारित आधुनिक प्रशासनिक संगठन व्यवस्था।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर (Textbook Exercise Answers)

प्रश्न 1. बौद्धिक ज्ञानोदय किस प्रकार समाजशास्त्र के विकास के लिए आवश्यक है?

उत्तर: बौद्धिक ज्ञानोदय (Enlightenment) ने समाजशास्त्र के विकास की वैचारिक नींव रखी:

1. **तर्क और विवेक की स्थापना:** ज्ञानोदय ने यह स्थापित किया कि संसार को समझने के लिए धार्मिक मान्यताओं या अंधविश्वासों के बजाय 'तर्क' और 'वैज्ञानिक सोच' का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. **मानव समाज का वैज्ञानिक अध्ययन:** इसने यह विचार दिया कि चूँकि समाज का निर्माण मनुष्यों द्वारा हुआ है, इसलिए समाज का भी प्राकृतिक विज्ञानों (जैसे भौतिकी या जीवविज्ञान) की तरह युक्तिसंगत और वैज्ञानिक विश्लेषण संभव है।
3. **धर्मनिरपेक्षता और परिवर्तन:** ज्ञानोदय ने व्यक्ति को चिंतन के केंद्र में रखा और यह माना कि सामाजिक संस्थाओं में सुधार और परिवर्तन लाया जा सकता है। इसी वैज्ञानिक सोच ने समाजशास्त्र जैसे नए सामाजिक विज्ञान को जन्म दिया।

प्रश्न 2. औद्योगिक क्रांति किस प्रकार समाजशास्त्र के जन्म के लिए उत्तरदायी है?

उत्तर: 18वीं-19वीं शताब्दी में ब्रिटेन से शुरू हुई औद्योगिक क्रांति ने यूरोपीय समाज के आर्थिक और सामाजिक जीवन को पूरी तरह से बदल दिया:

1. **नगरीकरण और नई समस्याएँ:** कारखानों के कारण लाखों लोग गाँवों से शहरों में आए। इससे शहरों में अत्यधिक भीड़, गंदी बस्तियों (Slums) का निर्माण, अपराध, और स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हुईं।
2. **श्रमिकों का शोषण:** मशीनीकरण से कम मजदूरी पर महिलाओं और बच्चों से 14-16 घंटे काम लिया जाने लगा, जिससे सामाजिक असंतोष बढ़ा।
3. **नए वर्गों का उद्भव:** पूँजीपति वर्ग और सर्वहारा (मज़दूर) वर्ग के बीच तीखा विभाजन और वर्ग-संघर्ष शुरू हुआ। इन अभूतपूर्व सामाजिक उथल-पुथल, व्यवस्थाहीनता और नई समस्याओं को वैज्ञानिक ढंग से समझने और सुलझाने के लिए विद्वानों ने 'समाजशास्त्र' की आवश्यकता महसूस की।

प्रश्न 3. उत्पादन के तरीकों के विभिन्न घटक कौन-कौन से हैं?

उत्तर: कार्ल मार्क्स के अनुसार, उत्पादन का तरीका (Mode of Production) किसी समाज का आर्थिक आधार होता है। इसके दो मुख्य घटक हैं:

1. उत्पादक शक्तियाँ (Productive Forces):

- इसके अंतर्गत वे सभी साधन आते हैं जिनकी मदद से उत्पादन किया जाता है।
- इसमें प्राकृतिक संसाधन (भूमि, जल, जंगल), तकनीक व उपकरण (मशीनें, औज़ार), ऊर्जा (वाष्प, बिजली) तथा मानवीय श्रम व कौशल शामिल हैं।

2. उत्पादन संबंध (Relations of Production):

- इसके अंतर्गत वे सामाजिक और आर्थिक संबंध आते हैं जो उत्पादन प्रक्रिया के दौरान मनुष्यों के बीच बनते हैं।
- ये मुख्य रूप से स्वामित्व और नियंत्रण (Property Relations) पर आधारित होते हैं—जैसे पूँजीवादी समाज में मालिक और मज़दूर के बीच का संबंध या सामंती समाज में ज़मींदार और कृषिदास के बीच का संबंध।

प्रश्न 4. मार्क्स के अनुसार विभिन्न वर्गों में संघर्ष क्यों होते हैं?

उत्तर: मार्क्स के अनुसार, समाज में वर्ग संघर्ष के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. **विरोधी आर्थिक हित (Antagonistic Economic Interests):** समाज में उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण को लेकर मुख्य रूप से दो वर्ग होते हैं—एक शोषक (मालिक) और दूसरा शोषित (मज़दूर)। दोनों के हित एक-दूसरे के विपरीत होते हैं। मालिक कम लागत में अधिकतम लाभ चाहता है, जबकि मज़दूर अधिक मजदूरी और बेहतर जीवन चाहता है।
2. **अतिरिक्त मूल्य का शोषण (Exploitation of Surplus Value):** पूँजीपति मज़दूर द्वारा निर्मित वस्तुओं के मूल्य का बड़ा हिस्सा खुद रख लेता है और मज़दूर को केवल जीवित रहने भर की मजदूरी देता है।
3. **वर्ग चेतना (Class Consciousness):** जब शोषित मज़दूर वर्ग को अपनी साझा दुर्दशा और शोषण के कारणों का अहसास होता है, तो वे संगठित होकर शासक वर्ग के खिलाफ क्रांति और संघर्ष करते हैं।

प्रश्न 5. 'सामाजिक तथ्य' क्या हैं? हम उन्हें कैसे पहचानते हैं?

उत्तर:सामाजिक तथ्य (Social Facts): एमिल दुर्खाइम के अनुसार, सामाजिक तथ्य आचरण, सोचने और महसूस करने के वे तरीके हैं जो व्यक्ति के बाहर (External) विद्यमान होते हैं और व्यक्ति पर बाध्यकारी (Coercive) प्रभाव डालते हैं।

पहचानने के तरीके:

1. बाह्यता (Externality): सामाजिक तथ्य व्यक्ति के जन्म से पहले भी समाज में मौजूद होते हैं (जैसे भाषा, विवाह प्रथा, मुद्रा, कानूनी नियम)।
2. बाध्यता (Coercion): यदि कोई व्यक्ति इन सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने का प्रयास करता है, तो समाज उसे दंड, उपहास या सामाजिक बहिष्कार द्वारा बाध्य करता है।
3. आनुभविक अवलोकन: सामाजिक तथ्यों को व्यक्तियों के कुल सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों (Patterns) के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से देखा और मापा जा सकता है (जैसे विवाह दर, अपराध दर या आत्महत्या दर)।

प्रश्न 6. 'यांत्रिक' और 'सावयवी' एकता में क्या अंतर है?

उत्तर:

आधार	यांत्रिक एकता (Mechanical Solidarity)	सावयवी एकता (Organic Solidarity)
1. समाज का रूप	पारंपरिक और सरल समाजों में पाई जाती है।	आधुनिक और औद्योगिक समाजों में पाई जाती है।
2. समानता/विशिष्टता	समाज के सदस्यों में समानता और एकरूपता होती है।	श्रम विभाजन के कारण सदस्यों में उच्च विशेषीकरण होता है।
3. व्यक्तिगत स्वतंत्रता	व्यक्ति सामूहिकता में लीन रहता है; स्वतंत्रता बहुत कम।	व्यक्ति को उच्च स्वायत्तता और अलग पहचान मिलती है।
4. कानून का प्रकार	दमनकारी कानून (सजा देना मुख्य उद्देश्य)।	क्षतिपूरक कानून (नुकसान की भरपाई/सुधार उद्देश्य)।
5. एकता का आधार	साझा मान्यताओं और चेतना पर आधारित।	परस्पर आर्थिक निर्भरता (Interdependence) पर आधारित।

प्रश्न 7. उदाहरण सहित बताएँ कि नैतिक संहिताएँ सामाजिक एकता को कैसे दर्शाती हैं?

उत्तर: एमिल दुर्खाइम के अनुसार, नैतिक संहिताएँ (Moral Codes) वे सामाजिक नियम व मानक हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं और समाज के सदस्यों को आपस में बाँधकर रखते हैं।

- **पारंपरिक समाजों में (यांत्रिक एकता):** नैतिक संहिताएँ अत्यधिक सख्त होती हैं। धर्म और परंपरा का उल्लंघन पूरे समाज के अस्तित्व के लिए खतरा माना जाता है।
- **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति जाति या धर्म के नियमों को तोड़ता है, तो पूरा समुदाय एकजुट होकर कठोर सजा देता है। यह सजा सामाजिक संहति और सामूहिक चेतना को बनाए रखने का प्रयास दर्शाती है।
- **आधुनिक समाजों में (सावयवी एकता):** नैतिक संहिताएँ संविधान, कानून और व्यावसायिक आचार-संहिता (Professional Ethics) के रूप में काम करती हैं।
- **उदाहरण:** एक डॉक्टर, वकील या शिक्षक अपने पेशगत नियमों का पालन करते हैं। यह नैतिक ढाँचा विभिन्न व्यवसायों के लोगों के बीच विश्वास और पारस्परिक निर्भरता बनाए रखता है, जिससे समाज में स्थिरता बनी रहती है।

प्रश्न 8. 'नौकरशाही' की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **निश्चित क्षेत्राधिकार:** प्रशासनिक कार्य लिखित नियमों और कानूनों द्वारा विभिन्न पदों के बीच स्पष्ट रूप से विभाजित होते हैं।
2. **पदों का सोपान क्रम (Hierarchy):** कार्यालयों में उच्च और निम्न पदों की एक शृंखला होती है, जहाँ उच्च पदस्थ अधिकारी निचले कर्मचारियों के कार्यों का नियंत्रण करते हैं।
3. **लिखित दस्तावेज (Files):** सभी प्रशासनिक निर्णय, आदेश और कार्यवाहियाँ फाइलों और अभिलेखों के रूप में लिखित रूप में सुरक्षित रखी जाती हैं।
4. **निर्वैयक्तिक आचरण (Impersonality):** अधिकारी अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष या पक्षपात के केवल कानूनी नियमों के अनुसार करते हैं।
5. **तकनीकी योग्यता व प्रशिक्षण:** पदों पर नियुक्ति सिफारिश के आधार पर नहीं, बल्कि लिखित परीक्षा, तकनीकी योग्यता और विशिष्ट प्रशिक्षण के आधार पर की जाती है।

प्रश्न 9. सामाजिक विज्ञान में किस प्रकार विशिष्ट तथा भिन्न प्रकार की वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता होती है?

उत्तर: मैक्स वेबर के अनुसार, प्राकृतिक विज्ञानों की तुलना में सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता (Objectivity) प्राप्त करना अधिक कठिन और विशिष्ट होता है:

1. **अध्ययन की विषय-वस्तु मनुष्य है:** प्राकृतिक वैज्ञानिक बेजान वस्तुओं (जैसे पत्थरों या रसायनों) का अध्ययन करते हैं, जबकि सामाजिक वैज्ञानिक स्वयं समाज का हिस्सा होते हैं और मनुष्यों के 'विषयगत अर्थों' व भावनाओं का अध्ययन करते हैं।
2. **समानुभूति (Verstehen) की आवश्यकता:** सामाजिक शोधकर्ता को कर्ता के स्थान पर खुद को रखकर उसकी क्रियाओं के आंतरिक अर्थों को समझना पड़ता है।

3. **मूल्य तटस्थता (Value Neutrality):** वेबर के अनुसार, सामाजिक वैज्ञानिक को 'लौह संकल्प शक्ति' का परिचय देते हुए शोध के दौरान अपने निजी धार्मिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत विचारों को पूरी तरह तटस्थ रखना चाहिए। उसे सामाजिक कर्ताओं के विचारों का केवल तटस्थ विवरण देना चाहिए, उन पर अपना निर्णय नहीं थोपना चाहिए।

प्रश्न 10. क्या आप ऐसे किसी विचार अथवा सिद्धांत के बारे में जानते हैं जिसने आधुनिक भारत में किसी सामाजिक आंदोलन को जन्म दिया हो?

उत्तर: हाँ, आधुनिक भारत में समानता, सामाजिक न्याय और अस्पृश्यता उन्मूलन के विचारों ने अनेक प्रमुख सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया है।

- **उदाहरण:** डॉ. बी.आर. आंबेडकर का सामाजिक न्याय एवं दलित अधिकार आंदोलन:
- **सिद्धांत/विचार:** डॉ. आंबेडकर ने ज्ञानोदय के स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों तथा बुद्ध के करुणा व समानता के विचारों को अपनाया। उन्होंने यह विचार रखा कि जातिगत असमानता और अस्पृश्यता मानव गरिमा के खिलाफ हैं।
- **आंदोलन पर प्रभाव:** इस विचार ने 'महाड़ सत्याग्रह' (1927), मंदिर प्रवेश आंदोलनों और दलित वर्ग के राजनीतिक व सामाजिक अधिकारों के लिए व्यापक आंदोलनों को जन्म दिया। इसने भारतीय संविधान में आरक्षण, मौलिक अधिकारों और अस्पृश्यता-निवारण (अनुच्छेद 17) को शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रश्न 11. मार्क्स तथा वेबर ने भारत के विषय में क्या लिखा है-पता करने की कोशिश कीजिए।

उत्तर:

1. **कार्ल मार्क्स और भारत:**

- मार्क्स ने भारत के संदर्भ में 'एशियाई उत्पादन प्रणाली' (Asiatic Mode of Production) की अवधारणा दी।
- उन्होंने माना कि पारंपरिक भारतीय समाज आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदायों में बँटा था, जहाँ भूमि पर निजी स्वामित्व नहीं था बल्कि गाँव का सामूहिक नियंत्रण था।
- मार्क्स ने न्यूयॉर्क ट्रिब्यून में भारत पर कई लेख लिखे। उन्होंने लिखा कि ब्रिटिश शासन ने भारत के पारंपरिक हथकरघा उद्योगों को नष्ट कर दिया, लेकिन साथ ही रेलवे और आधुनिक संचार देकर अनजाने में भारत के सामाजिक परिवर्तन की नींव भी रखी।

2. **मैक्स वेबर और भारत:**

- वेबर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द रिलिजन ऑफ इंडिया' (1958) में भारतीय धर्मों (विशेषकर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म) और समाजशास्त्र का अध्ययन किया।
- वेबर का तर्क था कि हिंदू धर्म के 'कर्म' और 'पुनर्जन्म' के सिद्धांतों ने लोगों को अपनी वर्तमान जाति और आर्थिक स्थिति को भाग्य मानकर स्वीकार करने पर मजबूर किया।
- वेबर के अनुसार, इस सांसारिक-विरक्ति (Asceticism) और मोक्ष की अवधारणा के कारण भारत में पश्चिमी यूरोप जैसा आधुनिक पूँजीवाद स्वतः विकसित नहीं हो सका।

प्रश्न 12. क्या आप कारण बता सकते हैं कि हमें उन चिंतकों के कार्यों का अध्ययन क्यों करना चाहिए जिनकी मृत्यु हो चुकी है? इनके कार्यों का अध्ययन न करने के कुछ कारण क्या हो सकते हैं?

उत्तर:

अध्ययन करने के कारण (महत्व):

1. **विषय की नींव और मूल अवधारणाएँ:** मार्क्स, दुर्खाइम और वेबर जैसे शास्त्रीय विचारकों ने समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं (जैसे वर्ग, सामाजिक तथ्य, अलगाव, नौकरशाही, सावयवी एकता) का निर्माण किया। आज के समाज को समझने के लिए इन सिद्धांतों को जानना अनिवार्य है।
2. **समकालीन समाज की प्रासंगिकता:** आज भी पूँजीवादी विषमताएँ (मार्क्स), औद्योगिक तनाव व अकेलापन (दुर्खाइम) और नौकरशाही व लालफीताशाही (वेबर) हमारे दैनिक जीवन की सच्चाई हैं।
3. **ऐतिहासिक समझ:** वे हमें यह समझने में मदद करते हैं कि आधुनिक समाज किन ऐतिहासिक क्रांतियों और प्रक्रियाओं से गुजरकर यहाँ तक पहुँचा है।

अध्ययन न करने / सीमा बताने के कारण (आलोचनाएँ):

1. **बदलते समय की सीमाएँ:** ये सिद्धांत 19वीं सदी के यूरोपीय समाज के संदर्भ में लिखे गए थे। आज का 21वीं सदी का वैश्वीकृत, डिजिटल और सूचना-आधारित समाज उन परिस्थितियों से बहुत अलग है।
2. **यूरोप-केंद्रित दृष्टिकोण (Eurocentric Bias):** इन विचारकों का दृष्टिकोण मुख्यतः पश्चिमी यूरोप के अनुभवों पर आधारित था, जो भारत जैसे गैर-पश्चिमी और औपनिवेशिक समाजों पर पूरी तरह लागू नहीं होता।

अध्याय 5:

भारतीय समाजशास्त्री (Indian Sociologists)

भारत में समाजशास्त्र का उद्भव एवं संस्थापक विचारक

(क) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- औपचारिक शुरुआत:** भारत में समाजशास्त्र का औपचारिक शिक्षण सर्वप्रथम 1919 ई. में बंबई विश्वविद्यालय में पैट्रिक गेड्डिस (Patrick Geddes) के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।
- विस्तार:** 1920 के दशक में कलकत्ता विश्वविद्यालय (मानवविज्ञान) और लखनऊ विश्वविद्यालय (समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र) में इसका शिक्षण और शोध कार्य शुरू हुआ।
- भारतीय संदर्भ की विशिष्टता:**
- पाश्चात्य देशों में समाजशास्त्र का उद्भव 'आधुनिकता' और औद्योगिक क्रांति की समस्याओं को समझने के लिए हुआ था।
- भारत में यह विषय उपनिवेशवाद (Colonialism) के दौर में आया। यहाँ समाजशास्त्रियों के सामने दोहरी चुनौती थी—पश्चिमी सिद्धांतों को समझना तथा भारतीय समाज की विशिष्ट संस्थाओं (जैसे- जाति, गाँव, जनजाति, परिवार) का प्रामाणिक अध्ययन करना।

(ख) अध्याय में वर्णित सभी प्रमुख समाजशास्त्रियों का संक्षिप्त परिचय

समाजशास्त्री का नाम	जीवनकाल	प्रमुख योगदान / अध्ययन क्षेत्र
1. एल. के. अनंतकृष्ण अय्यर	1861-1937	भारतीय नृवंशविज्ञान (Ethnography) के अग्रदूत; कोचीन व मैसूर की जातियों एवं जनजातियों का विस्तृत सर्वेक्षण।
2. शरत चंद्र राय	1871-1942	भारतीय मानवविज्ञान के जनक; छोटानागपुर की जनजातियों (ओरांव, मुंडा, खड़िया) का गहन क्षेत्रीय अध्ययन।
3. गोविंद सदाशिव घुर्ये (G.S. Ghurye)	1893-1983	बंबई समाजशास्त्रीय संप्रदाय के संस्थापक; जाति, प्रजाति,

		नातेदारी और जनजातियों (पिछड़े हिंदू) का ऐतिहासिक व भारतविद्या (Indology) अध्ययन।
4. धूर्जटि प्रसाद मुखर्जी (D.P. Mukerji)	1894–1961	लखनऊ संप्रदाय के प्रमुख विचारक; परंपरा और परिवर्तन (Tradition & Change), भारतीय संस्कृति और संगीत का समाजशास्त्रीय विश्लेषण।
5. अक्षय रमणलाल देसाई (A.R. Desai)	1915–1994	मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य; भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) की आलोचनात्मक समीक्षा।
6. मैसूर नरसिंहाचार श्रीनिवास (M.N. Srinivas)	1916–1999	प्रत्यक्ष क्षेत्रीय कार्य (Fieldwork); गाँव का अध्ययन (रामपुरा), 'संस्कृतीकरण' (Sanskritization) और 'प्रभु जाति' (Dominant Caste) की अवधारणा।

गोविंद सदाशिव घुर्ये (G.S. Ghurye: 1893–1983)

(क) संक्षिप्त जीवन परिचय व अकादमिक योगदान

- **संस्थापक भूमिका:** जी. एस. घुर्ये को भारत में समाजशास्त्र को संस्थागत रूप देने वाला 'संस्थापक पिता' माना जाता है। उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की और लगभग 35 वर्षों तक इसका नेतृत्व किया।
- **इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी (1952):** उन्होंने इस राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की और प्रसिद्ध शोध-पत्रिका 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' (Sociological Bulletin) प्रारंभ की।
- **प्रसिद्ध पुस्तक:** 'कास्ट एंड रेस इन इंडिया' (Caste and Race in India - 1932)।

(ख) जाति और प्रजाति पर घुर्ये के विचार (Caste and Race)

- **हर्बर्ट रिज़ले (Herbert Risley) के सिद्धांत का परीक्षण:**
- रिज़ले का मानना था कि भारत में जाति व्यवस्था 'प्रजाति' (Race) पर आधारित है और उच्च जातियाँ मूलतः 'आर्य' प्रजाति से हैं, जबकि निम्न जातियाँ गैर-आर्य/द्रविड़ प्रजाति से हैं।
- **घुर्ये का दृष्टिकोण:** घुर्ये ने रिज़ले के इस सिद्धांत को आंशिक रूप से ही सही माना। घुर्ये के अनुसार उत्तर भारत के 'हिंदुस्तान-गंगा के मैदान' में प्रजातीय शुद्धता कुछ हद तक दिखाई देती है, किंतु भारत के अन्य क्षेत्रों (जैसे दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, बंगाल) में विभिन्न प्रजातियों का इतना गहरा सम्मिश्रण हो चुका है कि जाति को केवल प्रजाति के आधार पर नहीं समझा जा सकता।

(ग) जाति व्यवस्था की 6 प्रमुख विशेषताएँ (Six Features of Caste)

घुर्ये ने जाति व्यवस्था की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसके 6 मुख्य लक्षण बताए:

1. **खंडात्मक विभाजन (Segmental Division):** समाज जन्म-आधारित स्वतंत्र खंडों (जातियों) में विभाजित है। व्यक्ति की प्रस्थिति जन्म से तय होती है, योग्यता से नहीं।
2. **संस्तरण या उच्च-नीच का क्रम (Hierarchical Ordering):** सभी जातियाँ एक निश्चित ऊँच-नीच के पायदान पर स्थित हैं, जिसमें ब्राह्मण शीर्ष पर और अस्पृश्य जातियाँ सबसे नीचे मानी जाती थीं।
3. **भोजन और सामाजिक सहवास पर प्रतिबंध (Restrictions on Feeding and Social Intercourse):** किस जाति के व्यक्ति के साथ बैठकर भोजन किया जा सकता है और किससे कच्चा/पक्का भोजन ग्रहण किया जा सकता है, इसके कड़े नियम थे।
4. **नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएँ और विशेषाधिकार (Civil and Religious Disabilities & Privileges):** उच्च जातियों को धार्मिक व सामाजिक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जबकि निचली जातियों पर कई प्रतिबंध (जैसे मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक कुओं का उपयोग न कर पाना) लागू थे।
5. **व्यवसाय के अप्रतिबंधित चयन का अभाव (Lack of Unrestricted Choice of Occupation):** जातियाँ पारंपरिक और आनुवंशिक व्यवसायों से जुड़ी थीं। व्यक्ति अपनी पसंद से आसानी से पेशा नहीं बदल सकता था।
6. **विवाह पर कड़े प्रतिबंध (Endogamy / अंतर्विवाह):** अपनी ही जाति या उपजाति के भीतर विवाह करना अनिवार्य था। यह जाति व्यवस्था का सबसे मजबूत स्तंभ है।

(घ) जनजातियों पर विचार: 'पिछड़े हिंदू' (Tribes as 'Backward Hindus')

- **पृष्ठभूमि:** 1930 और 1940 के दशक में ब्रिटिश प्रशासकों (जैसे वेरियर एल्विन) का मानना था कि जनजातियों को मुख्यधारा के हिंदू समाज से अलग (Isolated) रखा जाना चाहिए, क्योंकि हिंदुओं के संपर्क में आने से उनका शोषण हुआ है।
- **घुर्ये का तर्क:** घुर्ये ने 'पृथक्करण' (Isolation) का कड़ा विरोध किया। उन्होंने सिद्ध किया कि:
- भारतीय जनजातियाँ मुख्यधारा के समाज से पूरी तरह अलग कभी नहीं थीं।
- वे हिंदू समाज और संस्कृति के साथ सदियों से अंतःक्रिया करती रही हैं।
- इसलिए, जनजातियों को अलग समूह मानने के बजाय 'पिछड़े हिंदू' (Backward Hindus) माना जाना चाहिए और उनका विकास राष्ट्रीय समाज में आत्मसातीकरण (Assimilation / एकीकरण) द्वारा किया जाना चाहिए।

चाहिए।

धूर्जटि प्रसाद मुखर्जी (D.P. Mukerji: 1894–1961)

(क) संक्षिप्त जीवन परिचय व बौद्धिक पहचान

- डी. पी. मुखर्जी (जिन्हें प्यार से 'डी.पी.' कहा जाता था) लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र विभाग के अत्यंत लोकप्रिय एवं बहुआयामी विद्वान थे।
- वे मार्क्सवादी द्वंद्ववाद से प्रभावित थे, किंतु उन्होंने भारतीय इतिहास और परंपरा को समझे बिना मार्क्सवाद को सीधे लागू करने का विरोध किया।
- वे संगीत, साहित्य, संस्कृति और समाजशास्त्र के अद्भुत अध्येता थे।

(ख) परंपरा और परिवर्तन का समाजशास्त्र (Tradition and Change)

- **भारतीय समाजशास्त्र की विशिष्टता:** डी. पी. का दृढ़ मत था कि एक भारतीय समाजशास्त्री के लिए केवल पश्चिमी समाजशास्त्र की नकल करना व्यर्थ है। भारतीय समाज की मूल आत्मा उसकी 'सामाजिक परंपराओं' में बसती है।
- **परंपरा का अध्ययन क्यों जरूरी है?**
- भारत में व्यक्ति पश्चिमी देशों की तरह पूर्णतः 'स्वतंत्र इकाई' नहीं है; वह अपने परिवार, जाति और समूह की परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।
- अतः भारतीय सामाजिक वास्तविकता को समझने के लिए भारतीय परंपराओं, लोकाचारों और प्रतीकों का अध्ययन अनिवार्य है।

(ग) भारतीय परंपरा में परिवर्तन के तीन सिद्धांत

डी. पी. मुखर्जी के अनुसार भारतीय परंपरा जड़ या मृत नहीं है, बल्कि गतिशील (Dynamic) है। परंपरा में परिवर्तन और विकास तीन स्रोतों से होता है:

1. **श्रुति (Shruti):** प्रत्यक्ष रूप से सुना गया ज्ञान (वैदिक ज्ञान)।
2. **स्मृति (Smriti):** याद रखा गया ज्ञान और परंपराएँ, जो समय के साथ संहिताबद्ध हुईं।
3. **अनुभव (Anubhava):** व्यक्तिगत व सामूहिक प्रत्यक्ष अनुभव।

विशेष बिंदु: डी. पी. ने स्पष्ट किया कि भारतीय इतिहास में क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन 'अनुभव' के माध्यम से आए हैं। उदाहरण के लिए—**भक्ति आंदोलन** के संतों (कबीर, नानक, मीरा आदि) ने स्थापित रूढ़ियों को चुनौती देने के लिए अपने व्यक्तिगत 'प्रेम और अनुभव' को ही सबसे बड़ा प्रमाण माना।

(घ) परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

- डी. पी. आधुनिकता के विरोधी नहीं थे, लेकिन उनका मानना था कि आधुनिकता को बाहर से थोपा नहीं जा

सकता।

- वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब आधुनिक मूल्य हमारी जीवित परंपराओं (Living Traditions) के साथ संवाद करें और भीतर से बदलाव लाएँ।

अक्षय रमणलाल देसाई (A.R. Desai: 1915–1994)

(क) संक्षिप्त जीवन परिचय एवं बौद्धिक दृष्टिकोण

- **मार्क्सवादी समाजशास्त्री:** ए. आर. देसाई भारत के अग्रणी मार्क्सवादी समाजशास्त्री थे। उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय में जी. एस. घुर्ये के निर्देशन में शोध कार्य किया और बाद में वहीं समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष बने।
- **राजनीतिक सक्रियता:** वे केवल एक सैद्धांतिक विद्वान नहीं थे, बल्कि भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन और नागरिक स्वतंत्रता (Civil Liberties) के आंदोलनों से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे।
- **प्रमुख पुस्तक:** 'सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म' (The Social Background of Indian Nationalism - 1948)।

(ख) भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि (Social Background of Indian Nationalism)

- **मार्क्सवादी/द्वंद्ववादी परिप्रेक्ष्य:** देसाई ने भारतीय राष्ट्रवाद का विश्लेषण आर्थिक संरचना और वर्ग संबंधों के आधार पर किया।
- **ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का प्रभाव:**
- अंग्रेजों द्वारा नई भूमि व्यवस्था (जैसे जमींदारी व रैयतवाड़ी), आधुनिक परिवहन (रेलवे, डाक-तार) और आधुनिक शिक्षा की शुरुआत से भारत में पारंपरिक अर्थव्यवस्था नष्ट हुई।
- इसके परिणामस्वरूप भारत में नए सामाजिक वर्गों का उदय हुआ—जैसे आधुनिक बुर्जुआ (उद्योगपति/पूँजीपति वर्ग), पेशेवर मध्यम वर्ग, औद्योगिक मजदूर वर्ग और भूमिहीन किसान।
- **राष्ट्रवाद का उदय:** इन नए वर्गों के आर्थिक हितों के टकराव और ब्रिटिश शोषण के विरुद्ध साझा संघर्ष ने भारतीय राष्ट्रवाद की वास्तविक सामाजिक-आर्थिक नींव रखी।

(ग) राज्य और 'कल्याणकारी राज्य' पर देसाई के विचार (Critique of the Welfare State)

- **निबंध:** 'द मिथ ऑफ द वेलफेयर स्टेट' (The Myth of the Welfare State - कल्याणकारी राज्य का मिथक)।
 - आधुनिक लोकतांत्रिक देशों द्वारा 'कल्याणकारी राज्य' होने का दावा करने की वास्तविकता की जाँच के लिए देसाई ने तीन मुख्य कसौटियाँ (Three Key Criteria) निर्धारित कीं:
1. **सकारात्मक लोकतांत्रिक राज्य (Positive Democratic State):** राज्य केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने वाला 'पुलिस राज्य' न हो, बल्कि नागरिकों के समग्र विकास व बुनियादी अधिकारों के लिए सक्रिय कार्य करे।
 2. **मिश्रित अर्थव्यवस्था और सामाजिक नियंत्रण (Democratic Mixed Economy):** अर्थव्यवस्था में पूँजीवादी मुनाफे की अंधी दौड़ पर अंकुश हो और सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों पर लोक-कल्याणकारी सामाजिक नियंत्रण हो।

3. **समानता और सामाजिक सुरक्षा (Social Security & Redistribution of Wealth):** समाज के सभी नागरिकों को रोजगार, न्यूनतम आय, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक सुरक्षा की गारंटी मिले और आय की भारी असमानता को समाप्त किया जाए।

(घ) कल्याणकारी राज्य के दावों का आलोचनात्मक परीक्षण (The Reality Check)

देसाई ने आधुनिक पूँजीवादी देशों के आँकड़ों और कार्यप्रणाली का अध्ययन करके सिद्ध किया कि:

- किसी भी पूँजीवादी राज्य ने न तो गरीबी को पूरी तरह मिटाया और न ही पूर्ण रोजगार उपलब्ध कराया।
- धन और संपत्ति का केंद्रीयकरण लगातार कुछ मुट्ठी भर बड़े पूँजीपतियों के हाथों में बढ़ता गया।
- राज्य की नीतियाँ आम जनता की भलाई के बजाय वास्तव में पूँजीवादी व्यवस्था को बचाने और क्रांति की संभावना को टालने का साधन हैं।
- अतः पूँजीवादी ढाँचे के भीतर 'कल्याणकारी राज्य' का दावा वस्तुतः एक 'मिथक' (Myth/छलावा) है।

मैसूर नरसिंहाचार श्रीनिवास (M.N. Srinivas: 1916–1999)

(क) संक्षिप्त जीवन परिचय एवं दृष्टिकोण

- एम. एन. श्रीनिवास स्वतंत्रता के बाद के भारत के सबसे प्रभावशाली समाजशास्त्री और मानवविज्ञानी थे।
- उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में ए. आर. रेडक्लिफ-ब्राउन और ई. ई. इवांस-प्रिचार्ड के मार्गदर्शन में शिक्षा ग्रहण की।
- वे संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक (Structural-Functional) दृष्टिकोण और सघन क्षेत्रीय कार्य (Intensive Fieldwork) के प्रबल समर्थक थे।

(ख) गाँव का अध्ययन और क्षेत्रीय कार्य (Village Studies & Fieldwork)

- **पुस्तकीय ज्ञान बनाम क्षेत्रीय ज्ञान (Book View vs Field View):**
- श्रीनिवास ने केवल धर्मग्रंथों के आधार पर भारतीय समाज को समझने ('पुस्तकीय दृष्टिकोण') की आलोचना की।
- उन्होंने कहा कि वास्तविक भारत को समझना है तो प्रत्यक्ष गाँव में जाकर लोगों के बीच रहकर अध्ययन करना होगा ('क्षेत्रीय दृष्टिकोण')।
- **रामपुरा गाँव का अध्ययन:** उन्होंने मैसूर के निकट 'रामपुरा' गाँव में महीनों रहकर गहन अध्ययन किया, जिसके आधार पर उनकी विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'द रिमेंबर्ड विलेज' (The Remembered Village - 1976) प्रकाशित हुई।
- **गाँव का महत्व:** उन्होंने साबित किया कि भारतीय गाँव पूरी तरह से अलग-थलग या आत्मनिर्भर 'छोटे गणराज्य' नहीं थे, बल्कि वे हमेशा से व्यापक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था से जुड़े रहे हैं।

(ग) श्रीनिवास की प्रमुख समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ

1. प्रभु जाति (Dominant Caste)

गाँव या क्षेत्र में उस जाति को 'प्रभु जाति' कहा जाता है, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं:

- **भूमि पर बड़ा स्वामित्व:** क्षेत्र की अधिकांश उपजाऊ कृषि भूमि पर उस जाति का अधिकार हो।
- **संख्यात्मक बाहुल्य:** गाँव या क्षेत्र की जनसंख्या में उनकी संख्या अधिक हो।
- **स्थानीय संस्तरण में उच्च पद:** परंपरागत जाति क्रम में उनकी स्थिति बहुत नीची न हो।
- **राजनीतिक एवं आर्थिक शक्ति:** स्थानीय मामलों और न्याय प्रणाली में उनका वर्चस्व हो। (उदाहरण: पंजाब-हरियाणा में जाट, कर्नाटक में वोक्कालिगा/लिंगायत, आंध्र प्रदेश में रेड्डी/कम्मा, उत्तर प्रदेश में यादव आदि)।

2. संस्कृतीकरण (Sanskritization)

- **परिभाषा:** वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई निम्न हिंदू जाति, जनजाति या अन्य समूह किसी उच्च (प्रायः द्विज) जाति के रीति-रिवाजों, कर्मकांडों, शाकाहार, जीवनशैली और भाषा का अनुकरण करके जाति संस्तरण में उच्च पद का दावा करता है।
- **उद्देश्य:** आर्थिक या राजनीतिक स्थिति सुधरने के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा (Social Status) में वृद्धि करना।

महत्वपूर्ण शब्दावली (Glossary)

- **नृवंशविज्ञान (Ethnography):** किसी विशेष मानव समूह, जाति या समाज की जीवनशैली, संस्कृति और रीति-रिवाजों का प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा किया गया वैज्ञानिक व वर्णनात्मक अध्ययन।
- **आत्मसातीकरण (Assimilation):** वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई अल्पसंख्यक या पृथक सांस्कृतिक समूह मुख्यधारा के प्रभुत्वशाली समाज की संस्कृति, भाषा और मूल्यों को पूरी तरह अपना लेता है।
- **प्रजाति (Race):** मनुष्यों का ऐसा जैविक व शारीरिक वर्गीकरण जो विशिष्ट शारीरिक लक्षणों (जैसे- त्वचा का रंग, कद, सिर की बनावट, नाक का आकार) पर आधारित होता है।
- **क्षेत्रीय कार्य (Fieldwork):** समाजशास्त्र व मानवविज्ञान की वह शोध पद्धति जिसमें शोधकर्ता अध्ययन किए जाने वाले समाज/समुदाय के बीच स्वयं जाकर लंबे समय तक रहता है और प्रत्यक्ष आँकड़े एकत्र करता है।
- **द्विज (Dwija):** वे उच्च तीन वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) जिन्हें उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत) के बाद 'दूसरा जन्म' प्राप्त माना जाता था।
- **प्रभु जाति (Dominant Caste):** वह जाति जो संख्यात्मक बल, भूमि स्वामित्व और स्थानीय राजनीतिक प्रभाव के कारण किसी गाँव या क्षेत्र में प्रभुत्व रखती है।
- **संस्कृतीकरण (Sanskritization):** निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों की सांस्कृतिक व धार्मिक प्रथाओं का अनुकरण करने की सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया।
- **कल्याणकारी राज्य (Welfare State):** वह राज्य जो अपने सभी नागरिकों को आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम जीवन स्तर तथा बुनियादी अधिकार प्रदान करने का दायित्व लेता है।
- **ऐतिहासिक भौतिकवाद (Historical Materialism):** कार्ल मार्क्स का सिद्धांत जिसके अनुसार समाज के इतिहास और विकास की दिशा भौतिक व आर्थिक उत्पादन प्रणाली द्वारा तय होती है।

अभ्यास प्रश्न एवं उत्तर (Textbook Solutions)

प्रश्न 1: भारत में समाजशास्त्र के उद्भव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी?

उत्तर:

1. **औपनिवेशिक संदर्भ:** भारत में समाजशास्त्र का आगमन 20वीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश शासनकाल के दौरान हुआ। पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में इसका उद्देश्य औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा भारतीय समाज (जाति, धर्म, रीति-रिवाज) को समझना और नियंत्रित करना भी था।
2. **संस्थागत विकास:** 1919 में बंबई विश्वविद्यालय में सबसे पहले समाजशास्त्र का शिक्षण शुरू हुआ। इसके बाद 1920 के दशक में कलकत्ता और लखनऊ विश्वविद्यालयों में यह विषय स्थापित हुआ।
3. **भारतीय विद्वानों का योगदान:** भारतीय अग्रदूतों (जैसे- जी. एस. घुर्ये, डी. पी. मुखर्जी, ए. आर. देसाई, एम. एन. श्रीनिवास) ने केवल पश्चिमी सिद्धांतों को नहीं अपनाया, बल्कि भारत की विशिष्ट सामाजिक वास्तविकताओं (जाति, संयुक्त परिवार, ग्राम समुदाय और परंपराओं) के अनुसार एक स्वतंत्र भारतीय समाजशास्त्र की नींव रखी।

प्रश्न 2: जी. एस. घुर्ये ने जाति व्यवस्था की कौन-सी मुख्य विशेषताएँ बताई हैं?

उत्तर: जी. एस. घुर्ये ने अपनी पुस्तक 'कास्ट एंड रेस इन इंडिया' में जाति की 6 मौलिक विशेषताएँ बताई हैं:

1. **खंडात्मक विभाजन:** समाज जन्म-आधारित स्वतंत्र खंडों में बँटा है।
2. **संस्तरण (Hierarchy):** जातियों का एक निश्चित ऊँच-नीच का क्रम होता है।
3. **खान-पान और सामाजिक संपर्क पर प्रतिबंध:** सहभोज और संपर्क के कठोर नियम।
4. **नागरिक एवं धार्मिक नियोग्यताएँ और विशेषाधिकार:** उच्च जातियों को विशेषाधिकार और निम्न जातियों पर प्रतिबंध।
5. **व्यवसाय के चयन में प्रतिबंध:** वंशानुगत और पारंपरिक पेशों का अनिवार्य पालन।
6. **अंतर्विवाह (Endogamy):** अपनी ही जाति के अंदर विवाह करने का कड़ा नियम।

प्रश्न 3: जनजातियों के संदर्भ में घुर्ये और राष्ट्रवादी समाजशास्त्रियों के क्या विचार थे?

उत्तर:

- **ब्रिटिश नीति का विरोध:** ब्रिटिश विद्वान (जैसे वेरियर एल्विन) जनजातियों को हिंदुओं से अलग रखकर उनके 'संरक्षण' और 'पृथक्करण' (Isolation) के पक्षधर थे।
- **घुर्ये का मत ('पिछड़े हिंदू'):** घुर्ये ने इसका कड़ा विरोध किया। उन्होंने ऐतिहासिक साक्ष्यों से स्पष्ट किया कि भारतीय जनजातियाँ सदियों से हिंदू संस्कृति और समाज के साथ अंतःक्रिया करती रही हैं।
- **राष्ट्रीय एकीकरण:** घुर्ये का मानना था कि जनजातियाँ कोई पूर्णतः भिन्न नस्ल नहीं हैं बल्कि वे आर्थिक और शैक्षणिक रूप से 'पिछड़े हिंदू' हैं, जिनका विकास भारतीय राष्ट्र की मुख्यधारा में आत्मसातीकरण (एकीकरण) के माध्यम से होना चाहिए।

प्रश्न 4: डी. पी. मुखर्जी के अनुसार भारतीय समाजशास्त्री के लिए परंपरा का अध्ययन क्यों अनिवार्य है?

उत्तर:

1. **सामूहिक चेतना:** पाश्चात्य समाज व्यक्तिवादी है, जबकि भारतीय समाज 'सामूहिकता' और 'परंपरा' पर आधारित है। यहाँ व्यक्ति का व्यवहार उसके सामाजिक समूह और सांस्कृतिक परंपरा से संचालित होता है।
2. **परंपरा की गतिशीलता:** डी. पी. के अनुसार परंपरा कोई जड़ वस्तु नहीं है। भारतीय परंपरा में श्रुति, स्मृति और विशेषकर 'अनुभव' के माध्यम से निरंतर आंतरिक परिवर्तन होते रहे हैं।
3. **आधुनिकता का सार्थक अनुकूलन:** बाहर से थोपी गई पश्चिमी आधुनिकता भारतीय समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। केवल वही बदलाव स्थायी हो सकता है जो भारतीय परंपराओं के साथ संवाद स्थापित करे। इसलिए समाजशास्त्री को परंपरा का गहन ज्ञान होना अनिवार्य है।

प्रश्न 5: ए. आर. देसाई के अनुसार 'कल्याणकारी राज्य' की मुख्य कसौटियाँ क्या हैं और उन्होंने इसकी क्या आलोचना की?

उत्तर: ए. आर. देसाई ने कल्याणकारी राज्य के मूल्यांकन के लिए 3 मुख्य कसौटियाँ बताईं:

1. **सकारात्मक लोकतांत्रिक राज्य:** जो केवल कानून व्यवस्था तक सीमित न रहकर नागरिकों के कल्याण हेतु सक्रिय नीतियाँ बनाए।
2. **मिश्रित अर्थव्यवस्था:** जहाँ पूँजीवाद पर प्रभावी सामाजिक नियंत्रण हो और लोक-कल्याण को प्राथमिकता मिले।
3. **समानता व सामाजिक सुरक्षा:** जो सभी को रोजगार, बुनियादी सुविधाएँ और आय की असमानता में कमी सुनिश्चित करे।

देसाई की आलोचना: देसाई का तर्क था कि पूँजीवादी देशों में कल्याणकारी राज्य का दावा केवल एक 'मिथक' है क्योंकि वहाँ न तो गरीबी पूरी तरह समाप्त हुई, न बेरोजगारी हटी और न ही आय की भारी असमानता कम हुई; बल्कि राज्य पूँजीपतियों के हितों की रक्षा करने का साधन बना रहा।

प्रश्न 6: एम. एन. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपादित 'गाँव के अध्ययन' और 'क्षेत्रीय कार्य' के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1. **पुस्तकीय ज्ञान की सीमाओं को तोड़ना:** श्रीनिवास ने स्पष्ट किया कि केवल प्राचीन धर्मग्रंथों को पढ़कर भारतीय समाज को नहीं समझा जा सकता; इसके लिए वास्तविक, जीवंत समाज का प्रत्यक्ष अनुभव आवश्यक है।
2. **क्षेत्रीय कार्य (Fieldwork):** उन्होंने समाजशास्त्रियों को गाँवों में जाकर लंबे समय तक रहकर नृवंशवैज्ञानिक पद्धतियों से जानकारी जुटाने पर बल दिया।
3. **गाँव की यथार्थ तस्वीर:** उनके अध्ययनों (जैसे रामपुरा गाँव) ने साबित किया कि भारतीय गाँव स्थिर या पूरी तरह स्वावलंबी नहीं हैं, बल्कि वे जाति व्यवस्था, जजमानी प्रथा और व्यापक राजनीतिक-आर्थिक संरचनाओं से गहराई से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न 7: 'प्रभु जाति' (Dominant Caste) से क्या अभिप्राय है? इसके मुख्य लक्षण लिखिए।

उत्तर: एम. एन. श्रीनिवास के अनुसार, 'प्रभु जाति' वह जाति है जो किसी गाँव या स्थानीय क्षेत्र में अपना आर्थिक,

सामाजिक और राजनीतिक वर्चस्व रखती है। इसके चार प्रमुख लक्षण हैं:

1. **विशाल भू-स्वामित्व:** क्षेत्र की अधिकांश उपजाऊ कृषि भूमि पर उस जाति का मालिकाना हक होना।
2. **संख्यात्मक बाहुल्य:** स्थानीय जनसंख्या में उनकी संख्या का अधिक होना।
3. **जाति संस्तरण में सम्मानजनक स्थान:** परंपरागत पदानुक्रम में उनका स्थान बहुत नीचा न हो (मध्यम या उच्च)।
4. **स्थानीय शक्ति व प्रभाव:** ग्राम पंचायत, राजनीति और विवादों के निपटारे में निर्णायक भूमिका होना।

Raisarthhi.in